SAHABIYAT AUR DEEN KI KHATIR QURBANIYAN (HINDI)

सहाबियात और दीन की ख़ातिर क़ुरबानियां

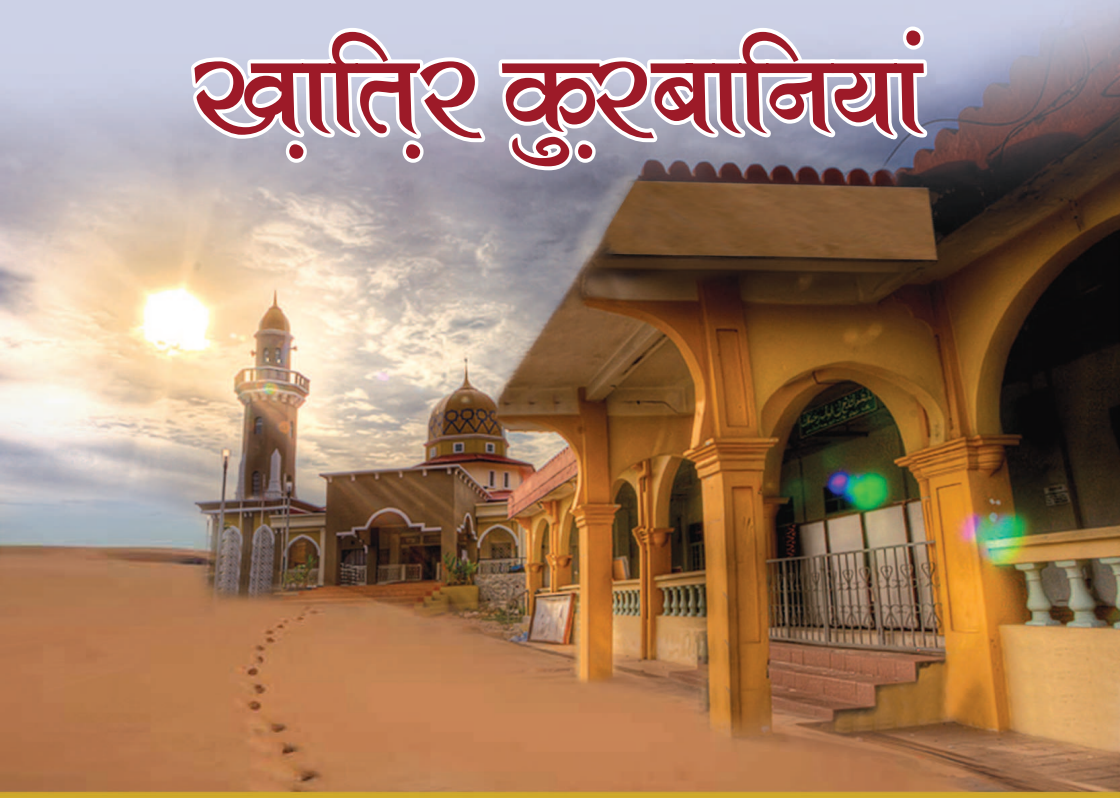

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह रिसाला उर्दू ज़बान में पेश किया है और मजलिसे तराजिम ने इस रिसाले का हिन्दी रस्मुल ख़त़ करने की सआ़दत ह़ासिल की है । भाषांतर (Translation) नहीं बल्कि लीपियांतर (Transliteration) या'नी बोली तो उर्दू ही है जब कि लीपि हिन्दी की गई है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ॊ = ئ	ॢ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सहाबियात और दीन की ख़ातिर क़ुरबानियां

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जुमुआ़ तुम्हारे दिनों में से सब से अफ़्ज़ल दिन है, इसी में ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) पैदा हुवे, इसी दिन सूर फूंका जाएगा और इसी दिन क़ियामत आएगी, लिहाज़ा इस दिन मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करो क्यूंकि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ पर पेश किया जाता है। एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमारा दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचेगा ह़ालांकि आप के विसाल को मुद्दत हो चुकी होगी ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के अजसाम को खाना ह़राम फ़रमा दिया है।[1]

हुक्मे ह़क़ है पढ़ो दुरूद शरीफ़ छोड़ो मत ग़ाफ़िलो दुरूद शरीफ़
तोह़फ़ा रूहे नबी को पहुंचाओ जितना पहुंचा सको दुरूद शरीफ़
जा के वहां पेश होगा नाम ब नाम जिस क़दर जिस का हो दुरूद शरीफ़
ख़ुद ख़ुदा भेजता है उन पे दुरूद तुम भी भेजा करो दुरूद शरीफ़
पाएंगे चार पुश्त तक बरकत दिल से भेजेंगे जो दुरूद शरीफ़

[1] ..... ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة...الخ، باب فی فضل الجمعة، ص۱۷۷، حدیث: ۱۰۸۵

www.dawateislami.net

आख़िरत के सफ़र को ऐ बेदल तौशा तुम ले चलो दुरूद शरीफ़[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

राहे ख़ुदा में पहली जान की क़ुरबानी

मश्हूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना अम्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا वोह शेर दिल ख़ातून हैं जिन्हों ने सब से पहले अपने ख़ून का नज़राना पेश कर के शजरे इस्लाम की जड़ों को मज़बूत किया। यूं उन्हें जहां इस्लाम की शहीदए अव्वल होने का ए'ज़ाज़ हासिल हुवा तो वहीं येह शरफ़ भी मिला कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا राहे ख़ुदा में जान का नज़राना पेश करने वाली वाहिद सहाबिया बन गईं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का शजरे इस्लाम के समरात से फ़ैज़याब होना ही आप का जुर्म बन गया और कुफ़्र के अन्धों ने इन पर ज़ुल्मो सितम के वोह पहाड़ तोड़े कि अल अमान वल हफ़ीज़। चुनान्चे, मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपने बेटे हज़रते सय्यिदुना अम्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और शोहर हज़रते सय्यिदुना यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के तपते सहरा में मक़ामे अबतह पर ईज़ाएं पाते देखते तो इरशाद फ़रमाते : ऐ आले यासिर ! सब्र करो ! तुम्हारे लिये जन्नत का वा'दा है।[2] अहले मक्का बिल ख़ुसूस दुश्मने इस्लाम अबू जहल ने कौन सा सितम है जो इन पर न किया, उसे बस इसी

1.....नूरुल ईमान अज़ अ़ब्दुस्समीअ़ बेदल, स. 39 मुल्तक़त़न

2..... اصابہ، ۱۱۳۴۲-سمیہ بنت خباط، ۸/ ۲۰۹

www.dawateislami.net

बात से समझ लीजिये कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को लोहे की ज़िरह पहना कर सख़्त धूप में खड़ा कर दिया जाता।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़रा तसव्वुर कीजिये कि जब धूप की गर्मी से लोहे का लिबास तपने लगता होगा तो अ़रब में सूरज की तपिश और इस पर लोहे के आग बरसाते लिबास में आप का क्या ह़ाल होता होगा ! मगर क़ुरबान जाइये उस शहीदए अव्वल की अ़ज़्मतो इस्तिक़ामत पर ! आप के दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत इस त़रह़ घर कर चुकी थी कि इतनी सख़्त तकालीफ़ के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इस्लाम का दामन न छोड़ा, बल्कि डट कर इन मुश्किल ह़ालात का मुक़ाबला किया और इस सिलसिले में उन सरदाराने क़ुरैश की अ़ज़्मत व बरतरी का क़त़्अ़न लिह़ाज़ न रखा कि जो हर लम्ह़ा उन्हें दोबारा कुफ़्र के अंधेरों में धकेलने के लिये एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे थे, आप का सब्रो इस्तिक़ामत से इस्लाम पर डट जाना उन सरदाराने क़ुरैश के मुंह पर गोया एक त़मांचा था, क्यूंकि क़ुरैश की अ़ज़्मत का सिक्का तो पूरे अ़रब पर था और वोह इस बात को कैसे बरदाश्त कर सकते थे कि उन्ही की आज़ाद कर्दा एक नादार बांदी उन की ग़ैरत को यूं ललकारे ! येही वज्ह है कि वोह इस हज़ीमत (शिकस्त) को बरदाश्त न कर सके और आप के ख़ून से सर ज़मीने अ़रब को सैराब कर के अपने तईं आप का क़िस्सा तमाम कर दिया, जिस का सबब कुछ यूं हुवा कि एक मरतबा अबू जह्ल ने नेज़ा तान कर उन्हें धमकाते हुवे कहा कि तू कलिमा न पढ़ वरना मैं तुझे येह नेज़ा मार दूंगा। ह़ज़रते बीबी सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने सीना तान कर ज़ोर ज़ोर से कलिमा पढ़ना शुरूअ़ किया, अबू जह्ल ने ग़ुस्से में भर कर उन की नाफ़ के नीचे

[1] ..... اسد الغابہ، ۷۰۲۱-سمیہ ام عمار، ۷/۵۳ ماخوذًا

www.dawateislami.net

इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि वोह ख़ून में लत पत हो कर गिर पड़ीं और शहीद हो गईं ।[1] अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जब तेरी याद में दुन्या से गया है कोई

जान लेने को दुल्हन बन के क़ज़ा आई है[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दीन क़ुरबानी चाहता है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम का येह लहलहाता खेत हमें ऐसे ही नहीं मिला बल्कि इस के लिये हमारे अस्लाफ़ ने बहुत सी क़ुरबानियां दीं । अपनी जानो माल, घरबार, बीवी बच्चे और दीगर अइज़्ज़ा व अक़रिबा ग़रज़ कि हर चीज़ दीने इस्लाम की तरक़्क़ी और ए'लाए कलिमए ह़क़ (ह़क़ का कलिमा बुलन्द करने) के लिये क़ुरबान कर दी । ब क़ौले शाइ़र :

जान दी, दी हुई उसी की थी

ह़क़ तो येह है कि ह़क़ अदा न हुवा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने ह़क़ की सर बुलन्दी के लिये मर्दों की क़ुरबानियां और शुजाअ़त व इस्तिक़ामत की दास्तानें अपनी जगह, मगर ख़वातीन की क़ुरबानियों का बाब भी बहुत वसीअ़ है । अव्वलीन मुसलमान

1 .....जन्नती ज़ेवर, स. 508 ब ह़वाला الاستیعاب، ۳۳۹۷-سمیہ ام عمار بن یاسر، ۵۳۴/۲

2 .....ज़ौक़े ना'त, स. 178

www.dawateislami.net

ख़वातीन ने इस्लाम की ख़ातिर कैसी कैसी मशक़्क़तें बरदाश्त कीं और इस राह में क्या कुछ क़ुरबान किया ? तारीख़ इन ख़वातीन की जुरअत व बेबाकी पर आज भी हैरान है। याद रहे ! इस दीन की जड़ों को मज़बूत करने के लिये सब से पहले एक ख़ातून ने ही अपने ख़ून का नज़राना पेश किया। येही नहीं बल्कि जब भी दीन की ख़ातिर अपनी या अपने घरवालों की जान देने या किसी की जान लेने की ज़रूरत पड़ी तो मुसलमान ख़वातीन के माथे पर शिकन तक न उभरी, इन्हों ने घरबार लुटा दिये, ख़ून के रिश्तों को ख़ुशी ख़ुशी मौत के हवाले कर दिया, अपनी आबाई सर ज़मीन को छोड़ कर दूर कहीं जा कर बसना पड़ा तो भी इन के हौसले कभी पस्त न हुवे, इन्हें तपते सहराओं में लिटाया गया, दहकते कोइलों पर बिछाया गया, लोहे के लिबास पहना कर सूरज की तमाज़त (शदीद गर्मी) का मज़ा चखाया गया, इन के बच्चों और अहले ख़ाना को नज़रों के सामने सूली पर लटकाया गया, नेज़ों, तल्वारों, ख़न्जरों और कोड़ों के साथ लहू लुहान किया गया, भूके प्यासे धूप में बांध कर रखा गया, घरबार, बहन भाई, मां बाप, आल औलाद और हर दिल अज़ीज़ रिश्तों से जुदा किया गया और वतने अज़ीज़ से निकाला गया। ज़ुल्मो जब्र और सफ़्फ़ाकी की कोई कसर उठा न रखी गई मगर तपते सहरा और अंधेरी ठठरती रातें गवाह हैं कि इस सिन्फ़े नाज़ुक की इस्तिक़ामत में ज़र्रा बराबर जुम्बिश न आई और हमेशा के लिये औराक़े तारीख़ को इन की क़ुरबानियां महफ़ूज़ करना पड़ीं। ज़माने के ज़ुल्मो सितम इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या से इन की दौलते ईमान न छीन सके। इस पर उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का येह फ़रमान शाहिद है कि

www.dawateislami.net

وَمَا نَعْلَمُ اَنَّ اَحَدًا مِّنَ الْمُهَاجِرَاتِ اِرْتَدَّتْ بَعْدَ اِيْمَانِهَا

या'नी हम नहीं जानतीं कि किसी मुहाजिरा औरत ने ईमान लाने के बा'द इस्लाम से मुंह फेरा हो।[1]

दीन की ख़ातिर अज़िय्यतें बरदाश्त करने वाली सहाबियाते तय्यिबात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते सय्यिदतुना सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बहुत ख़ुश क़िस्मत थीं जिन के जहाने फ़ानी से कूच का सबब इन का बहरे इस्लाम में मुस्तग़रक़ होना बना, आप के क़त्ले नाहक़ से कुफ़्फ़ारे बद अत़वार का मक़्सूद तो अगर्चे येह था कि इस्लाम के नाम लेवा कम हो जाएंगे और डर जाएंगे मगर येह महज़ उन की ख़ाम ख़याली ही साबित हुई, क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शहादत ने आशिक़ाने रसूल के दिलों में एक नई रूह फूंक दी और वोह सब जन्नत की अबदी व सरमदी ने'मतों के हुसूल की ख़ातिर कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मो सितम को हंस हंस कर सहने लगे। इस्लाम लाने पर कुफ़्फ़ार ने मर्दों पर तो ज़ुल्मो सितम के जो पहाड़ ढाए थे वोह अपनी जगह, मगर उन ज़ालिमों ने औरतों और बच्चों को भी मुआफ़ न किया और उन के साथ ऐसे ऐसे ज़ालिमाना सुलूक रवा रखे जिन की तस्वीर कशी से क़लम का सीना शक़ हो जाता है। आइये ! ज़रा मुख़्तसर जाइज़ा लेती हैं कि राहे ख़ुदा में सहाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ पर किस त़रह़ ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े गए और उन्हों ने इन मज़ालिम पर क्या त़र्ज़े अमल अपनाया ?

[1] ..... بخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجهاد...الخ، ص۷۰۹، حدیث: ۲۷۳۳

www.dawateislami.net

ज़ुल्मो सितम की आंधियां

ज़ुल्मो सितम की उन आंधियों के आगे सीना सिपर हो जाने वाली हस्तियों में ह़ज़रते सय्यिदतुना नहदिया और इन की बेटी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी हैं। येह दोनों बनू अ़ब्दुद्दार की एक औ़रत की बांदियां थीं जो इन्हें सख़्त तक्लीफ़ें दिया करती और कहा करती कि मैं कभी तुम्हें आज़ाद न करूंगी और येही सुलूक जारी रखूंगी, अगर इस से छुटकारा चाहती हो तो तौह़ीद का इन्कार कर दो या फिर येह भी हो सकता है कि तुम्हारा हम मज़हब कोई शख़्स तुम्हें ख़रीद के आज़ाद कर दे। एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के पास से गुज़रे तो वोह औ़रत उस वक़्त भी इन्हें येही कह रही थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ उम्मे फ़ुलां ! इन्हें आज़ाद कर दो। वोह बोली : आप ने इन दोनों को बिगाड़ा है आप ही आज़ाद करें। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्हें ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।[1]

साबिरा ख़ातून

ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी उम्मे उ़बैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने भी दीन की ख़ातिर बहुत मज़ालिम बरदाश्त किये। येह बनी ज़ोहरा की बांदी थीं और इन को भी काफ़िरों ने बहुत सताया, बेह़द ज़ुल्मो सितम किया। बिल ख़ुसूस अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को सख़्त तकालीफ़ पहुंचाता और ज़ुल्मो सितम ढाता।[2]

[1] .....سبل الھدی والرشاد، الباب الخامس عشر فی عدوان المشرکین...الخ، ۲/۳۶۱ملخصًا

[2] .....اصابہ، ۱۲۱۶۳-ام عبیس، ۸/۴۹۱ملتقطًا

www.dawateislami.net

येही नहीं बल्कि येह बद बख़्त जब सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर आ़शिक़ाने ख़ुदा व रसूल को देखता तो मज़ाक़ उड़ाता। (आख़िरे कार इस का अन्जाम येह हुवा कि) एक दिन येह अपने घर से निकला तो गर्म झुलस देने वाली हवा ने इसे अपनी लपेट में ले लिया, जिस से इस का चेहरा सियाह हो गया और येह ह़बशी मा'लूम होने लगा। जब अपने घर लौटा तो अहले ख़ाना ने पहचानने से इन्कार कर दिया और दरवाज़ा बन्द कर लिया। वहां से ह़ैरान व परेशान वापस लौटा और फिर इधर उधर ज़लीलो ख़्वार फिरता रहा मगर कोई इसे पहचानता न खाने पीने को कुछ देता और यूंही भूका प्यासा वासिले जहन्नम हो गया।(1)

बीनाई लौट आई

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को वह़्दहू ला शरीक मानने और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने की पादाश (जुर्म) में अज़िय्यतों की संगलाख़ चट्टानों का सामना करने वाली एक सह़ाबिया ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़िन्नीरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी हैं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बांदी थीं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया और कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम से नजात दिलाई। चुनान्चे,

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه (जो कि अभी तक ईमान न लाए थे) और अबू जह्ल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को सख़्त तकालीफ़ देते यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की आंखों की बीनाई जाती रही। इस पर अबू जह्ल लईन ने कहा : तेरी येह ह़ालत लातो उ़ज़्ज़ा (या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का के बुतों) ने की है। तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने सब्रो इस्तिक़ामत और जुरअत भरा

(1) .... سبل الهدی والرشاد، الباب الرابع والثلاثون فی خبر بعض المستهزئین...الخ، ۲/۲۰۳ ملخصًا

www.dawateislami.net

जवाब देते हुवे कहा : लातो उ़ज़्ज़ा तो येह भी नहीं जानते कि उन की पूजा कौन करता है ? येह आज़माइश तो मेरे रब की त़रफ़ से है और मेरा मालिक व परवर दगार मेरी बीनाई लौटाने पर क़ादिर है । चुनान्चे, अगली ही सुब्ह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की आंखें रोशन फ़रमा दी ।[1]

मारते मारते थक जाते

दीने इस्लाम की ख़ातिर मुसीबतों के पहाड़ के सामने सीसा पिलाई दीवार बन जाने वाली एक पाक त़ीनत सहाबिया ह़ज़रते सय्यिदतुना लुबैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बनी मुअम्मल की बांदी थीं । इब्तिदाए इस्लाम में ही इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का नूर इन के दिल में चमक उठा और येह दामने मुस्त़फ़ा से वाबस्ता हो गईं, कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन पर भी ज़ुल्मो सितम की इन्तिहा कर दी । चुनान्चे, मन्क़ूल है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुईं तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो अभी तक मुसलमान न हुवे थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दीने इस्लाम छोड़ने पर सख़्त सज़ाएं देते और इतना मारते कि मारते मारते ख़ुद थक जाते और कहते : मैं तुझे कहीं का न छोड़ूंगा । तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जवाब में कहतीं : ऐ उ़मर ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान न लाए तो अल्लाह तआ़ला भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करेगा । आख़िरे कार जब ज़ुल्मो सितम बढ़ते गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को भी ख़रीद कर आज़ाद कर दिया ।[2]

[1] ..... سبل الھدی والرشاد، الباب الخامس عشر فی عدوان المشرکین...الخ، ۲/۳۶۱ ملتقطًا وملخصًا

[2] ..... سیرت ابن ھشام، مباداۃ رسول اللہ...الخ، ذکر عدوان...الخ، المجلد الاول، ۱/۲۰۴ مفھومًا

www.dawateislami.net

चेहरा लहू लुहान हो गया

इस्लाम क़बूल करने से पहले अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ईमान लाने वालों के बहुत ख़िलाफ़ थे। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 679 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब जन्नती ज़ेवर सफ़ह़ा 518 पर है : ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन (ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) और उन के शोहर ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शुरूअ़ ही में मुसलमान हो गए थे मगर येह दोनों ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के डर से अपना इस्लाम पोशीदा रखते थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन दोनों के मुसलमान होने की ख़बर मिली तो ग़ुस्से में आग बगूला हो कर बहन के घर पहुंचे, किवाड़ (दरवाज़े के पट) बन्द थे मगर अन्दर से क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ आ रही थी, दरवाज़ा खटखटाया तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ सुन कर सब घरवाले इधर उधर छुप गए, बहन ने दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चिल्ला कर बोले कि ऐ अपनी जान की दुश्मन ! क्या तू ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया है ? फिर अपने बहनोई ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर झपटे और उन की दाढ़ी पकड़ कर ज़मीन पर पछाड़ दिया और मारने लगे। इन की बहन ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शोहर को बचाने के लिये ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पकड़ने लगीं तो इन को ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसा त़मांचा मारा कि कान के झूमर टूट कर गिर पड़े और चेहरा ख़ून से रंगीन हो गया। बहन ने निहायत जुरअत के साथ साफ़ साफ़ कह दिया कि उ़मर ! सुन लो तुम से जो हो सके कर

www.dawateislami.net

लो मगर अब हम इस्लाम से कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं फिर सकते । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहन का जो लहू लुहान चेहरा देखा और इन का जोशो जज़्बात में भरा हुवा जुम्ला सुना तो एक दम उन का दिल नर्म पड़ गया, थोड़ी देर चुप खड़े रहे फिर कहा कि अच्छा तुम लोग जो पढ़ रहे थे वोह मुझे भी दिखाओ, बहन ने क़ुरआन शरीफ़ के वर्क़ों को सामने रख दिया, ह़ज़रते उ़मर ने सूरए ह़दीद की चन्द आयतों को बग़ौर पढ़ा तो कांपने लगे और क़ुरआन की ह़क़्क़ानिय्यत की तासीर से दिल बे क़ाबू हो कर थर्रा गया, जब इस आयत पर पहुंचे कि

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ (پ۲۷، الحدید:۷)

या'नी **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ तो फिर ह़ज़रते उ़मर ज़ब्त न कर सके आंखों से आंसू जारी हो गए बदन की बोटी बोटी कांप उठी और ज़ोर ज़ोर से पढ़ने लगे :

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

फिर एक दम उठे और ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर जा कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने रह़मत से चिमट गए और फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सब मुसलमानों को अपने साथ ले कर ख़ानए का'बा में गए और अपने इस्लाम का ए'लान कर दिया ।[1]

उम्मे बिलाल पर मज़ालिम की इन्तिहा

राहे ख़ुदा में दर्दनाक अज़िय्यतों और तक्लीफ़ों को बरदाश्त करने वाली एक शेर दिल ख़ातून ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़मामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी हैं ।

[1] ..... تاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب، فصل فی الاخبار الواردۃ فی اسلامہ، ص۷۱ مفہومًا

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन पर होने वाले मज़ालिमे कुफ़्फ़ार बरदाश्त न कर सके तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्हें भी ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।[1]

शिकारी खुद शिकार हो चले

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने दीन की ख़ातिर जो तकालीफ़ बरदाश्त कीं बसा औक़ात उन का येह तकालीफ़ सहना दूसरों के क़बूले इस्लाम का सबब भी बन गया। चुनान्चे, मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दिल में जब इस्लाम की अ़ज़मत ने बसेरा किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को येह फ़िक्र दामनगीर हुई कि येह खुद तो नजाते उख़रवी पा जाएंगी मगर इन की जानने वालियां कहीं जहन्नम का ईंधन न बन जाएं। चुनान्चे, इन्हों ने अपनी जानने वालियों को भी जहन्नम का ईंधन बनने से बचाने के लिये रात दिन कोशिशें शुरूअ़ फ़रमा दीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बड़ी ख़ामोशी और इस्तिक़ामत से क़ुरैश की ख़वातीन तक नेकी की दा'वत पहुंचाया करती थीं, अहले मक्का को जब ख़बर हुई तो उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पकड़ लिया और कहने लगे : अगर हमें तुम्हारे क़बीले का लिह़ाज़ न होता तो तुम्हें सख़्त सज़ा देते लेकिन अब हम तुम्हें (यहां अपने पास मक्का में नहीं रहने देंगे बल्कि) मुसलमानों के पास (मदीनए त़य्यिबा) पहुंचा कर ही दम लेंगे। लिहाज़ा उन्हों ने इन्हें एक ऐसे ऊंट पर सुवार किया जिस पर कोई कजावा था न

[1] .....سبل الهدی والرشاد، الباب الخامس عشر فی عدوان المشرکین...الخ، ۲/۳۶۱ مفهوماً

www.dawateislami.net

कोई कपड़ा व ज़ीन वग़ैरा। इस पर मज़ीद येह कि जब भी वोह किसी मक़ाम पर पड़ाव डालते तो इन्हें बांध कर धूप में डाल देते और ख़ुद साए में जा कर बैठ जाते। मुसलसल तीन दिन तक इन की येही हालत रही, वोह इन्हें न कुछ खिलाते न पिलाते। क़ुरबान जाएं इन की इस्तिक़ामत पर ! इन्हों ने अ़रब की उस चिलचिलाती धूप में सफ़र की सुऊ़बतों (तक्लीफ़ों) के इलावा भूक प्यास की सख़्तियां भी झेलीं मगर लम्हा भर के लिये भी सब्र का दामन अपने हाथ से न छोड़ा। आख़िर जब येह अपने होश से बेगाना होने लगीं तो रह़मते ख़ुदावन्दी ने आगे बढ़ कर इन्हें अपनी आग़ोश में ले लिया और इन पर करम की ऐसी बारिश बरसाई कि इन पर ज़ुल्मो सितम करने वाले ख़ुद ताइब हो कर मुसलमान हो गए गोया शिकारी ख़ुद शिकार हो गए। हुवा कुछ यूं कि

एक दिन जब क़ाफ़िले वालों ने एक जगह पड़ाव डाला और इन्हें बांध कर ह़स्बे मा'मूल धूप में डाल कर ख़ुद साए में चले गए तो अचानक इन्हों ने अपने सीने पर किसी चीज़ की ठंडक महसूस की, देखा तो वोह पानी का एक डोल था जो आस्मान की वुस्अ़तों से नुमूदार हुवा था। इन्हों ने बे ताबी से अभी थोड़ा सा पानी पिया था कि वोह बुलन्द हो गया, कुछ देर बा'द डोल फिर आया इन्हों ने इस बार भी थोड़ा सा ही पानी पिया था कि उसे फिर उठा लिया गया। कई बार ऐसा हुवा, जब थोड़ा थोड़ा कर के पानी इन के जिस्म में गया तो येह क़ुद्रे जान में आ गई और फिर वोह डोल सारे का सारा ही इन के ह़वाले कर दिया गया, इन्हों ने ख़ूब सैर हो कर पिया और बाक़ी पानी अपने जिस्म और कपड़ों पर उंडेल लिया। जब वोह लोग आए, इन पर पानी का असर पाया और इन्हें अच्छी ह़ालत में देखा तो पूछने लगे : क्या तुम ने खुल कर हमारे मश्कीज़ों से

www.dawateislami.net

पानी पिया है ? इन्हों ने इन्कार करते हुवे जब उन्हें अस्ल माजरा बताया तो उन्हें क़त्अ़न यक़ीन न आया, अलबत्ता ! कहने लगे कि अगर तुम सच्ची हो तो फिर तुम्हारा दीन हमारे दीन से बेहतर है। लिहाज़ा जब उन्हों ने अपने मश्कीज़ों को देखा और उन्हें ऐसे ही पाया जैसे उन्हों ने छोड़े थे तो वोह सब मुसलमान हो गए।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घबराइये मत !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिग़ैर हिम्मत हारे आप भी ख़ूब ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश करती रहिये और इस ज़िम्न में अगर कोई भी तक्लीफ़ पहुंचे तो सब्रो शिकेबाई का दामन हाथ से मत छोड़िये बल्कि आने वाली मुसीबत पर हमेशा सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की उन तक्लीफ़ों और अज़िय्यतों को याद कर लीजिये जो उन्हों ने राहे ख़ुदा में बरदाश्त कीं और कभी भी सब्र का दामन हाथ से न छोड़ा। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ उन सह़ाबियाते त़य्यिबात (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ) के सदक़े ख़ुदा का करम होगा और आप का इन तकालीफ़ पर सब्र करना आप के लिये बहुत बड़ी भलाई का पेश ख़ैमा साबित होगा। क्यूंकि दीने इस्लाम क़ुरबानियों से फैला है, हम तो मुसलमान घराने में पैदा हुईं, दुन्या में आते ही कानों में अज़ान गूंजी, हर त़रह़ की मज़्हबी आज़ादी मुयस्सर, कोई नमाज़ से रोकने वाला न कोई कलिमा पढ़ने पर ज़ुल्म ढाने वाला। येह सब ने'मतें उन्ही नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की क़ुरबानियों का नतीजा हैं जिन्हों ने अपना सब कुछ लुटा

[1] ..... معرفة الصحابه، ۴۱۱۲-ام الشريك الدوسيه، ص۳۵۱۸، حديث:۷۹۶۷ مفهومًا

www.dawateislami.net

दिया मगर दीन पर आंच न आने दी, बिलाशुबा उन सब की क़ुरबानियों को किसी सूरत फ़रामोश नहीं किया जा सकता कि जो क़ौमें अपने मोह़सिनों को भूल जाती हैं ज़वाल उन का मुक़द्दर ठहरता है।

राहे ख़ुदा में कैसी चीज़ पेश की जाए ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ैरो भलाई ह़ासिल करने का एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ येह भी है कि राहे ख़ुदा में हमेशा ऐसी चीज़ का नज़राना पेश किया जाए जो पसन्दीदा व मह़बूब हो। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुद हमारी इस मुआ़मले में रहनुमाई कुछ यूं फ़रमाई है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ (پ۴، آل عمران: ۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।*

इस ए'तिबार से ग़ौर करें तो मा'लूम होगा कि तीन ही चीज़ें ऐसी हैं जिन से इन्सान प्यार कर सकता है या'नी माल, जान या ख़ानदान। अगर सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ की सीरत की रोशनी में इन तीनों चीज़ों का जाइज़ा लिया जाए तो अ़क़्ल दंग रह जाती है कि इन्हों ने इस्लाम की ख़ातिर माल तो माल अपनी या अपने ख़ानदान वालों की जानों का नज़राना पेश करने से भी कभी दरेग़ न किया। जब भी जहां भी इस्लाम के नाम पर इन तीनों चीज़ों में से किसी चीज़ की ह़ाजत पेश आई तो इस्लाम की इन अव्वलीन ख़वातीन के जज़्बए ईमानी में इन चीज़ों की क़ुरबानियों से इज़ाफ़ा ही हुवा, कभी कमी वाक़ेअ़ न हुई। किसी ने गोया कि सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ के इसी जज़्बए ईमानी को क्या ख़ूब शे'री सूरत में पेश किया है :

www.dawateislami.net

तुन्दी बादे मुख़ालिफ़ से न घबरा ऐ उक़ाब

येह तो चलती है तुझे ऊंचा उड़ाने के लिये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आइये ! जैल में सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की राहे ख़ुदा में माल, जान और ख़ानदान के हवाले से दी जाने वाली चन्द क़ुरबानियां मुलाहज़ा करती हैं :

माल की क़ुरबानी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम ने सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ से जैसी भी क़ुरबानी मांगी इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने फ़ौरन पेश कर दी ।

कंगन हुक्मे सरकार पर क़ुरबान

एक सहाबिया बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं तो उन के हाथ में सोने के दो बड़े बड़े कंगन थे जिन्हें देख कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम इन की ज़कात देती हो ? अ़र्ज़ की : नहीं ! इरशाद फ़रमाया : तो क्या येह पसन्द करती हो कि क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें (इन की ज़कात न देने के सबब) आग के कंगन पहनाए ? येह सुन कर उस नेक बख़्त सहाबिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़ौरन कंगन उतार कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करते हुवे अ़र्ज़ की : येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये हैं ।[1]

[1] ..... ابوداود، کتاب الزکوۃ، باب الکنز ماھو...الخ، ص ۲۵۴، حدیث: ۱۵۶۳

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उस सहाबिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की अ़ज़मत पर क़ुरबान ! जैसे ही सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से हुक्मे शरीअ़त और अ़ज़ाबे इलाही की वईद सुनी, फ़ौरन कंगन रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों में पेश कर दिये ।[1] सहाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की सीरत का मुत़ालआ़ करने से येह बात मा'लूम होती है कि राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने में उन्हों ने कभी भी लैतो ला'ल (टाल मटोल) से काम न लिया, बल्कि उन के पेशे नज़र हमेशा रिज़ाए ख़ुदावन्दी का ह़ुसूल रहा और बसा औक़ात वोह मालो दौलत की फ़िरावानी को अपने लिये बोझ महसूस किया करतीं । चुनान्चे,

एक रिवायत में है कि एक बार उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के क़राबत दार ह़ज़रते सय्यिदुना मुन्कदिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحِمَہُ اللّٰہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपनी किसी ह़ाजत का ज़िक्र किया, (उस वक़्त आप के पास कुछ न था, चुनान्चे) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन से फ़रमाया : जो कुछ भी मुझे मिला मैं सब से पहले आप को ही भेजूंगी । अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि किसी ने दस हज़ार दिरहम आप की ख़िदमत में पेश किये तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने आप से फ़रमाने लगीं : ऐ आ़इशा ! किस क़दर जल्द तुम्हें माल की आज़माइश में मुब्तला कर दिया गया है ! लिहाज़ा फ़ौरन वोह तमाम दिरहम ह़ज़रते सय्यिदुना मुन्कदिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحِمَہُ اللّٰہ को भिजवा दिये ।[2]

[1]....सहाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की दीन के लिये माली क़ुरबानियों का तफ़्सीली मुत़ालआ़ करने के लिये अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बए फ़ैज़ाने सहाबियात का पेशकर्दा रिसाला "सहाबियात और इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह" मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

[2] ..... صفة الصفوة، محمد بن المنكدر...الخ، المجلد الاول، ۲/۹۷

www.dawateislami.net

जान की क़ुरबानी

जान से भी ज़ियादा सरकार से महब्बत

ज़िन्दगी से महब्बत अगर्चे एक फ़ितरी अमल है मगर क़ुरबान जाइये सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ के इश्क़े मुस्तफ़ा पर ! इन्हें अपनी जानों से ज़ियादा सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत थी। जैसा कि एक रिवायत में है कि हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की ख़ाला हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते उत्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا एक बार सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुईं तो अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! एक वक़्त था जब मैं चाहती थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर के इलावा दुन्या भर में किसी का मकान न गिरे मगर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अब मेरी ख़्वाहिश है कि दुन्या में किसी का मकान रहे या न रहे मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मकान ज़रूर सलामत रहे। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई भी उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़दीक उस की जान से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत सिर्फ़ कामिल व अक्मल ईमान की अलामत ही नहीं बल्कि हर उम्मती पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह हक़ भी है कि वोह

[1] ..... اسد الغابہ، ۷۱۹۰-فاطمۃ بنت عتبۃ، ۷/۲۲۳

www.dawateislami.net

सारे जहान से बढ़ कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत रखे और सारी दुन्या को आप की महब्बत पर क़ुरबान कर दे।

मुहम्मद की महब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है
मुहम्मद की महब्बत है सनद आज़ाद होने की
ख़ुदा के दामने तौहीद में आबाद होने की (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जान देना या किसी की जान लेना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिलाशुबा हज़रते सय्यिदतुना सुमय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا दीन पर मर मिटने वाली ख़वातीन की सरख़ील (अमीर व सरदार) हैं, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जिस दौर में इस्लाम क़बूल किया वोह वक़्त बड़ा कड़ा था, हर त़रफ़ ज़ुल्मो सितम की मुंह ज़ोर आंधियां चल रही थीं, मगर जब दीन को एक मज़बूत इमारत का साइबान मुयस्सर आया तो दीन के रखवाले ज़ुल्मो सितम की उन आंधियों के सामने इस त़रह़ सीसा पिलाई दीवार बन कर खड़े हो गए कि कुफ़्र के ऐवानों में ज़लज़ला बपा हो गया। चुनान्चे, जब दीन पर मर मिटने के लिये अपनी जान देने और किसी की जान लेने का मरह़ला आया तो मर्दाने ह़क़ की हिम्मतों और इरादों को मज़बूत से मज़बूत तर बनाने में जो किरदार सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ ने अदा किया वोह किसी से ढका छुपा नहीं। इस लिये कि जब भी कुफ़्फ़ार की यलग़ार के वक़्त बर सरे पैकार

1 .....सह़ाबए किराम का इश्क़े रसूल, स. 22

www.dawateislami.net

आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा के क़दम लड़ खड़ाए या कभी किसी मौक़अ़ पर उन्हों ने कमज़ोरी दिखाई तो इस्लाम की येह अव्वलीन व बहादुर ख़वातीन अपनी नज़ाकत व निस्वानिय्यत को बालाए त़ाक़ (अलग) रख कर मैदाने जिहाद में इस त़रह़ कूदीं कि बात़िल को हमेशा अपने मुंह की खाना पड़ी। येह नाज़ुक शीशियां घुमसान की जंग में नंगी तल्वार बन गईं और इन्हों ने अपने सामने आने वाले हर मुंहज़ोर व सरकश शैत़ान को काट कर रख दिया। इन के दिल में कभी बात़िल क़ुव्वतों से टकराते वक़्त ख़ौफ़ ने जगह ली न कभी किसी लम्ह़े येह घबराई, क्यूंकि इन के दिल में तो बस एक ही बात समाई हुई थी कि अ़ज़मत व नामूसे रिसालत पर जान तो क़ुरबान हो सकती है मगर इस की शान व आन पर कोई ह़र्फ़ व निशान आए ऐसा हो नहीं सकता। दीन पर क़ुरबान हो जाने का जज़्बा रखने वाली इन नाज़ुक कलियों को ख़ून आशाम (ख़ूं ख़्वार) शेरनियों के रूप में दहाड़ते देख कर तारीख़े आ़लम आज भी वर्त़ए ह़ैरत (ह़ैरत के भंवर व गिरदाब) में है। जैसा कि उहुद के मैदान में जब मुसलमानों की सफ़ों में अबतरी (बे तरतीबी) पैदा हुई और कुफ़्फ़ार की यलग़ार बढ़ी तो इस आ़लम में ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने बहादुरी के जो जोहर दिखाए इसे ज़ैल के अश्आ़र में क्या ही ख़ूब बयान किया गया है :

उहुद में ख़िदमतें जिन की बहुत ही आश्कारा थीं
उन्हीं में एक बीबी ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा थीं
पए इस्लाम दे कर अपने फ़रज़न्दों की क़ुरबानी
पिलाती थी येह बीबी ज़ख़्मियाने जंग को पानी
नबी की ज़ात पर जब झुक पड़े ईमान के दुश्मन
हुवे इस ज़िन्दगी बख़्शे जहां की जान के दुश्मन
इसी शम्ए हुदा पर जब पलट कर आ गई आंधी
तो इस बीबी ने रख दी मश्क, चादर से कमर बांधी
थे इस के शोहर व फ़रज़न्द भी मसरूफ़े जां बाज़ी
रसूलुल्लाह पर क़ुरबान थे अल्लाह के ग़ाज़ी

www.dawateislami.net

हुई येह शेरज़न भी अब क़ितालो जंग में शामिल सिपर बन कर लगी फिरने वोह गिर्दे हादिये कामिल
येह अपनी जान पर हर ज़ख़्म दामनगीर लेती थी कोई हिर्बा वुजूदे पाक तक आने न देती थी
नज़र आई नई सूरत जो हिज्रें जाने पैग़म्बर किया इक लख़्त बढ़ कर हमला एक बदकेश ने इस पर
निहत्ती थी मगर करने लगी पैकार दुश्मन से मरोड़ा उस का बाज़ू छीन ली तल्वार दुश्मन से
उसी शमशीर से उस ने सरे शमशीर ज़न काटा हुवा इस शेरज़न के ख़ौफ़ से आ'दा में सन्नाटा
जिधर बढ़ते हुवे पाती थी वोह महबूबे बारी को पहुंचती थी वहीं उम्मे अम्मारा जां निसारी को
सर व गर्दन पे उस बीबी ने तेरह ज़ख़्म खाए थे मगर मैदान से उस के क़दम हटने न पाए थे
येह उठी थी नमाज़े सुब्ह को तारों के साए में नमाज़े ज़ोहर तक क़ाइम थी तल्वारों के साए में

येही माएं हैं जिन की गोद में इस्लाम पलता है
इसी ग़ैरत से इन्सां नूर के सांचे में ढलता है[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अम्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह जज़्बए जिहाद व शौक़े शहादत सिर्फ़ दौरे नबवी तक ही महदूद न रहा बल्कि जब मुसैलमा कज़्ज़ाब ने ताज व तख़्ते ख़त्मे नुबुव्वत पर डाका डालना चाहा और नुबुव्वत का झूटा दा'वा किया तो उस की सरकोबी करने वाले लश्कर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी अपने बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ शामिल थीं। इस जंग में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का एक हाथ मुबारक मफ़्लूज हुवा और जिस्म पर तल्वार और नेज़े के 12 ज़ख़्म आए।[2]

1 .....शाहनामए इस्लाम मुकम्मल, हिस्सए सिवुम, स. 496
2 ..... استیعاب، ۳۶۰۰-امّ عمّارہ الانصاریہ، ۲/۵۹۰

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا का हाथ मुबारक चूंकि नामूसे रिसालत की हि़फ़ाज़त में मफ़्लूज हुवा था लिहाज़ा बारगाहे ख़ुदावन्दी में आप की येह क़ुरबानी कुछ यूं मक़्बूल हुई कि आप के इस हाथ में येह बरकत पैदा हो गई कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا अपना येह हाथ जिस भी मरीज़ को मस कर के उस के लिये दुआ़ फ़रमातीं वोह शिफ़ा पा जाता।(1)

इसी त़रह़ जंगे यरमूक के मौक़अ़ पर जब मुसलमानों की सफ़ों में कमज़ोरी की दराड़ें पड़ने लगीं तो ख़वातीने इस्लाम ने आगे बढ़ कर जो कारहाए नुमायां सर अन्जाम दिये वोह भी किसी से पोशीदा नहीं, मसलन सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद अन्सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने नौ काफ़िरों को ख़ैमे की एक लकड़ी से क़त्ल किया।(2)

येही नहीं बल्कि जब शाम के मैदाने अजनादैन में रूम की फ़ौजें सफ़ आरा होने लगीं तो मुल्के शाम में मुख़्तलिफ़ जगहों पर मसरूफ़े जिहाद इस्लामी लश्कर ने भी एक ही जगह जम्अ़ होने का इरादा कर लिया। उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ दिमश्क़ का मुह़ासरा किये हुवे थे, जब मुह़ासरा तर्क कर के वोह सब भी अजनादैन की त़रफ़ रवाना हुवे तो दिमश्क़ में मौजूद मह़सूर रूमियों की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। चूंकि वोह क़ल्ए़ की दीवार से इस्लामी लश्कर की रवानगी का येह मन्ज़र देख चुके थे कि लश्कर का एक बड़ा हि़स्सा आगे आगे जब कि उन के पीछे मह़ज़ एक हज़ार मुह़ाफ़िज़ों की मइय्यत में मालो अस्बाब और

---

[1] ......روض الانف، امّ عمّارہ و امّ منیع بیعۃ القبۃ الاخری، ۴/۱۱۸

[2] ......معجم کبیر، باب الالف، اسماء بنت یزید...الخ، ۱۰/۲۳۱، رقم: ۱۹۸۸۲

www.dawateislami.net

औरतों और बच्चों का क़ाफ़िला चल रहा है तो उन्हों ने इस मौक़अ़ को ग़नीमत जानते हुवे अ़क़ब (पीछे) से ह़म्ला कर के मालो अस्बाब हथयाने का प्रोग्राम बना लिया। लिहाज़ा उन्हों ने अपने फ़ासिद इरादों की तक्मील के लिये 16 हज़ार के लश्कर को दो ह़िस्सों में तक़्सीम किया और छे हज़ार रूमियों ने मुह़ाफ़िज़ीने क़ाफ़िला पर ह़म्ला कर दिया जब कि दूसरे बड़े दस हज़ार पर मुश्तमिल ह़िस्से ने औरतों और बच्चों को क़ैदी बना लिया और सब मालो अस्बाब लूट कर चलता बना। मुह़ाफ़िज़ीने क़ाफ़िला चूंकि दुश्मनों के एक ह़िस्से के साथ बर सरे पैकार थे और औरतों बच्चों की रखवाली कोई नहीं कर रहा था, चुनान्चे, एक मुह़ाफ़िज़ ने इस मुश्किल घड़ी में आगे आगे जाने वाले इस्लामी लश्कर को सूरते ह़ाल से आगाह करने के लिये अपने घोड़े को हवा के दोश पर दौड़ाना शुरूअ़ कर दिया।

उधर मालो अस्बाब वग़ैरा लूटने वाला रूमी लश्कर फ़त्ह़ की ख़ुशी में फूला न समा रहा था और एक जगह रुक कर अपने बाक़ी मांदा (बचे हुवे) लश्कर का इन्तिज़ार कर रहा था, जब इस मुश्किल घड़ी में ख़वातीने इस्लाम ने ख़ुद पर ग़ौर किया तो ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला बिन्ते अज़वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने तमाम औरतों को मुख़ात़ब करते हुवे फ़रमाया : इस्लाम की बहादुर बेटियो ! क्या इस बात पर राज़ी हो कि रूमी हम पर ग़ालिब आ जाएं और हम इन मुशरिकों की बांदियां बन कर रहें ? हमारी वोह बहादुरी कि जिस का शोहरा हर ख़ासो आ़म की ज़बान पर है, कहां चली गई ? हमारी शुजाअ़त और दानिशमन्दी को आज क्या हो गया है ? ऐ इस्लाम की ग़ैरत मन्द ख़वातीन ! इन मुशरिकों की बांदी बन कर जीने से मर जाना ज़ियादा बेहतर है, ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इ़ज़्ज़त की मौत अच्छी है, आज वक़्त का तक़ाज़ा है कि बहादुरी का मुज़ाहरा

www.dawateislami.net

करो और इन रूमियों से लड़ते हुवे जामे शहादत नोश करो। इस पर जब किसी ने अपने बे सरो सामान और ख़ाली हाथ होने के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ख़ैमों की चोबें और दीगर लकड़ियां ले कर इन रूमी नाकसों (ज़लीलों) पर ह़म्ला कर दो, मुमकिन है कि हम इन पर ग़ालिब आ जाएं, वरना क्या होगा ! येही कि मर्तबए शहादत पा जाएंगी ? येह सुन कर सब ख़वातीन ने ख़ैमों की चोबें निकाल लीं और हाथ में एक एक चोब पकड़ कर यकबारगी रूमियों पर टूट पड़ीं। गोया कि सरापा नज़ाकत ने पैकरे शुजाअ़त का रूप इख़्तियार कर लिया, ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सब से पेश पेश थीं, एक चोब उन के हाथ में थी और एक एक कांधे और पुश्त पर बांध रखी थी ताकि एक के टूट जाने पर दूसरी इस्ति'माल में लाई जा सके। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا चूंकि इस्लाम के बत़ले जलील ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हमशीरा थीं इस लिये बहादुरी व बे जिगरी आप के ख़ून में शामिल थी। जब एक रूमी सिपाही ने आगे बढ़ कर इन्हें रोकने की कोशिश की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस के सर पर इस ज़ोर की चोब मारी कि उस का सर तरबूज़ की त़रह़ फट गया। फिर क्या था दीगर ख़वातीन की हिम्मत और बढ़ गई और यूं उन सब ने मिल कर तक़रीबन 30 रूमियों को वासिले जहन्नम कर दिया। इधर इस्लामी लश्कर भी छे हज़ार रूमियों में से 5900 को तहे तेग़ करने और 100 को गिरिफ़्तार करने के बा'द इन की ह़िफ़ाज़त के लिये आ गया। इस दस्ते की क़ियादत ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमा रहे थे, उन्हों ने दूर से रूमी लश्कर में अबतरी (बे तरतीबी) के आसार देखे तो अह़वाल से आगाही पाने के लिये किसी को भेजा, जब येह ह़क़ीक़त मा'लूम हुई कि

www.dawateislami.net

मुसलमान ख़वातीन ने रूमियों को मार मार कर उन का भुरकस (कचूमर) निकाल दिया है तो ख़ुदा का शुक्र अदा किया और फ़ौरन आगे बढ़ कर इन पाक दामन बीबियों को बुरी नज़र देखने और इन की इस्मत व इज़्ज़त से खेलने का नापाक ख़्वाब देखने वालों का नाम सफ़्हए हस्ती से मिटा डाला।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! इस्लामी तारीख़ ऐसे बेशुमार वाक़िआत से भरी पड़ी है कि जब कभी भी इस्लाम पर कोई कड़ा वक़्त आया तो इस्लाम की अव्वलीन ख़वातीन ने जान देने से मुंह मोड़ा न दुश्मनाने इस्लाम की जान लेने से कभी उन्हों ने गुरैज़ किया। बिलाशुबा उन के मुतअ़ल्लिक़ येह कहा जा सकता है कि वोह इस शे'र की अ़मली सूरत थीं :

जान दी, दी हुई उसी की थी

हक़ तो येह है कि हक़ अदा न हुवा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अइज़्ज़ा व अक़रिबा और अहलो इयाल की क़ुरबानी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने दीन की ख़ातिर अपनी हर महबूब चीज़ क़ुरबान कर दी। भला मां-बाप, बहन भाई और औलाद से बढ़ कर कौन प्यारा हो सकता है! इन मुक़द्दस हस्तियों ने बाग़े इस्लाम की आबयारी के लिये अपने जिगर गोशों तक का ख़ून पेश कर दिया। आइये इन में से चन्द एक की क़ुरबानियों का तज़किरा मुलाहज़ा करती हैं। चुनान्चे,

[1] ..... فتوح الشام، خولہ بنت الازور، ۲/۴۴ تا ۵۰ ملتقطًا وملخصًا

www.dawateislami.net

चार बेटे क़ुरबान करने वाली मां

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 24 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले जोशे ईमानी सफ़ह़ा 5 पर है : जंगे क़ादिसिया (जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में लड़ी गई थी) में ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़न्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا चारों शहज़ादों समेत शरीक हुई थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जंग से एक रोज़ क़ब्ल अपने चारों शहज़ादों को इस त़रह़ नसीह़त फ़रमाई : मेरे प्यारे बेटो ! तुम अपनी ख़ुशी से मुसलमान हुवे और अपनी ही ख़ुशी से तुम ने हिजरत की, उस ज़ात की क़सम ! जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुम एक ही मां बाप की औलाद हो, मैं ने तुम्हारे नसब को ख़राब नहीं किया, तुम्हें मा'लूम है कि **अल्लाह ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला करने में मुजाहिदीन के लिये अ़ज़ीमुश्शान सवाब रखा है। याद रखो ! आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी दुन्या की फ़ना होने वाली ज़िन्दगी से ब दरजहा बेहतर है। सुनो ! सुनो ! क़ुरआने पाक के पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 200 में इरशाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا ۟ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۠(۲۰۰)

(پ۴، آل عمران:۲۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरह़द पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और **अल्लाह** से डरते रहो, इस उम्मीद पर कि कामयाब हो।*

www.dawateislami.net

सुब्ह को बड़ी होशियारी के साथ जंग में शिर्कत करो और दुश्मनों के मुक़ाबले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद तलब करते हुवे आगे बढ़ो और जब तुम देखो कि लड़ाई ज़ोर पर आ गई और उस के शो'ले भड़कने लगे हैं तो उस शो'लाज़न आग में कूद जाना, काफ़िरों के सरदार का मुक़ाबला करना, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इज़्ज़तो इकराम के साथ जन्नत में रहोगे। जंग में हज़रते सय्यिदतुना ख़न्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के चारों शहज़ादों ने बढ़ चढ़ कर कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला किया और यके बा'द दीगरे जामे शहादत नोश कर गए। जब इन की वालिदए मोहतरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इन की शहादत की ख़बर पहुंची तो उन्हों ने बजाए वावेला मचाने के कहा : उस प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे चार शहीद बेटों की मां बनने का शरफ़ अ़ता फ़रमाया। मुझे **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रहमत से उम्मीद है कि मैं भी इन चारों शहीदों के साथ जन्नत में रहूंगी।[1]

ग़ुलामाने मुहम्मद जान देने से नहीं डरते
येह सर कट जाए या रह जाए कुछ परवा नहीं करते

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बाप, भाई और शोहर की क़ुरबानी

ग़ज़वए उहुद के मौक़अ़ पर शैतानी अफ़्वाह सुन कर क़बीलए बनी दीनार की एक सहाबिया जज़्बात पर क़ाबू न रख पाईं और अपने घर से निकल कर मैदाने जंग की तरफ़ चल पड़ीं, रास्ते में उन्हें उन के बाप, भाई और शोहर की शहादत की ख़बर मिली मगर उन्हों ने कोई परवा नहीं की और लोगों से येही

[1] ..... اسد الغابہ، ۶۸۸۳-خنساء بنت عمرو، ۷/ ۹۰-۹۱

www.dawateislami.net

पूछती रहीं : येह बताओ ! मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? जब उन्हें बताया गया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप हर त़रह़ ब ख़ैरिय्यत हैं तो भी उन की तसल्ली न हुई और कहने लगीं : तुम लोग मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार करा दो । जब लोगों ने उन्हें आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब ले जा कर खड़ा कर दिया और उन्हों ने जमाले नुबुव्वत को देखा तो बे इख़्तियार ज़बान से येह जुम्ला निकल पड़ा : كُلُّ مُصِيْبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ या'नी आप के होते हुवे हर मुसीबत हैच (मा'मूली) है ।

बढ़ कर उस ने रुख़े अन्वर को जो देखा तो कहा :
तू सलामत है तो फिर हैच हैं येह सब रंजो अलम
मैं भी और बाप भी शोहर भी बरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं ! तेरे होते क्या चीज़ हैं हम (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह अक्बर ! इन सह़ाबिया ने दीन और साह़िबे दीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर शोहर, बाप, भाई तीनों को क़ुरबान कर दिया और उन के शहीद होने से दिल पर सदमात के तीन तीन पहाड़ बरदाश्त किये लेकिन क़ुरबान जाइये इन के इश्क़े मुस्त़फ़ा पर ! अ़र्ज़ करती हैं : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के होते हुवे हर मुसीबत हैच (मा'मूली) है ।

1 .....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 832 बि तसर्रुफ़ ब ह़वाला

سیرت ابن هشام، غزوه احد، تحریض عمر لحسان الخ، المجلد الثانی، ۳/۴۷

www.dawateislami.net

उन के निसार कोई कैसे ही रंज में हो

जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिये हैं (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ालू, भाई और शोहर की क़ुरबानी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज देखा जाए तो किसी का हल्का सा कारोबारी नुक़्सान हो जाए या कोई फ़ौत हो जाए तो वावेला मच जाता है। न जाने कितने दिन तक आहो फ़ुग़ां की सदाएं बुलन्द होती रहती हैं और एक सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ थीं कि सब कुछ क़ुरबान कर के भी शुक्रे इलाही बजा लाती थीं, एक नहीं दो नहीं तीन तीन रिश्तेदार राहे ख़ुदा में क़ुरबान हो जाते, मगर येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या फिर भी राज़ी ब रिज़ाए इलाही रहतीं। इन्ही बुलन्द हौसला मुहिब्बे दीन हस्तियों में से एक हज़रते सय्यिदतुना हमना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी हैं। चुनान्चे, मरवी है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर और आप के 70 रुफ़क़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) को शहादत नसीब फ़रमाई तो आप की ज़ौजए मोहतरमा हज़रते सय्यिदतुना हमना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ हमना ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सवाब की उम्मीद रख। अ़र्ज़ की : किस बात पर ? फ़रमाया : तुम्हारे ख़ालू हम्ज़ा शहीद हो गए हैं ! येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़ा और अ़र्ज़ की : उन्हें शहादत मुबारक हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर अपनी रहमत फ़रमाए और उन की बख़्शिश फ़रमाए। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ हमना ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सवाब की उम्मीद रख। अ़र्ज़ की :

1 .....हदाइक़े बख़्शिश. स. 101

www.dawateislami.net

किस बात पर ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा भाई भी शहीद हो गया है ! येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फिर اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ पढ़ते हुवे अ़र्ज़ की : उन्हें भी जन्नत मुबारक हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पर भी अपनी रह़मत फ़रमाए और उन्हें बख़्श दे । इस के बा'द तीसरी बार फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ ह़मना ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सवाब की उम्मीद रख । अ़र्ज़ की : किस बात पर ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा शोहर भी शहीद हो गया है ! येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने शिद्दते ग़म से बे इख़्तियार हो कर जब दुख का इज़्हार किया तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : औ़रत के दिल में जो मह़ब्बत अपने शोहर के लिये होती है वैसी किसी और के लिये नहीं होती । फिर उसी मौक़अ़ पर दुख के इज़्हार के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो अ़र्ज़ गुज़ार हुई : मुझे बच्चों की यतीमी याद आ गई थी, हम पर नज़रे करम फ़रमाइये । चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन बच्चों के लिये बेहतरीन कफ़ील मिलने की दुआ़ फ़रमाई ।[1]

सब्रो ईसार की आ'ला मिसाल

सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने बारगाहे रिसालत से दीन की ख़ातिर क़ुरबानियों और फिर इन पर सब्रो इस्तिक़ामत का जो जज़्बा पाया था, येह उन्हीं पाक बीबियों का ह़िस्सा था कि वोह राहे ख़ुदा में अपने अ़ज़ीज़ों की मुस्लाशुदा लाशों (या'नी जिस लाश के नाक, कान और दीगर आ'ज़ा वग़ैरा काट दिये जाएं, उस) को देख कर भी कमाले सब्र का मुज़ाहरा करतीं । चुनान्चे,

[1] ..... کتاب المغازی، غزوۃ احد، ۱/۲۹۱ مفہوماً

www.dawateislami.net

जब मैदाने उहुद में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बड़ी बे दर्दी से शहीद किया गया और उन के नाक कान वग़ैरा काट कर लाश मुबारक की बे हुर्मती की गई तो आप की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कफ़न ले कर ह़ाज़िर हुईं तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें आगे आने से मन्अ़ करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया, मबादा (कहीं) आप अपने भाई की ह़ालत देख कर सब्र का दामन हाथ से खो न बैठें। चुनान्चे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से अ़र्ज़ की : अम्मी जान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को वापस जाने का फ़रमा रहे हैं। इस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : मुझे ख़बर मिल चुकी है कि मेरे भाई का मुस्ला किया गया है, चूंकि ऐसा राहे ख़ुदा में हुवा है, इस लिये मैं इस से राज़ी हूं और सब्र करूंगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ लिहाज़ा उन्हें आगे जाने की इजाज़त मिल गई[1] और जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कफ़न पहनाने लगे तो ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस मौक़अ़ पर ऐसे ईसार का मुज़ाहरा किया जो रहती दुन्या तक اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुनहरे हुरूफ़ से लिखा जाता रहेगा और वोह येह कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने अ़ज़ीज़ भाई के कफ़न के लिये दो कपड़े लाईं थीं मगर जब आप को कफ़न पहनाया गया तो आप के साथ दफ़्न होने वाले सह़ाबी के कफ़न के लिये कोई कपड़ा मुयस्सर न था, चुनान्चे, आप ने एक कपड़ा उस सह़ाबी को दे दिया और एक कपड़े से अपने भाई को कफ़न दिया।[2]

[1] .... اصابہ، ۱۱۴۱۱ – صفیہ بنت عبد المطلب، ۸/۲۳۶ ملخصًا

[2] .... مسند احمد، مسند العشرۃ... الخ، مسند الزبیر بن العوام، ۱/۴۵۷، حدیث: ۱۴۳۴ ماخوذًا

www.dawateislami.net

बिन्ते सिद्दीक़े अक्बर की क़ुरबानियां

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दीने इस्लाम की ख़ातिर जिस क़दर क़ुरबानियां दी हैं ज़माना उन्हें सुब्हे क़ियामत तक याद रखेगा। मसलन अपनी जवानी में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दीन की ख़ातिर थप्पड़ खाए, चुनान्चे, आप ख़ुद येह वाक़िआ कुछ यूं बताती हैं कि जब रसूले पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मेरे वालिदे मोहतरम हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हिजरत के इरादे से निकले तो क़ुरैश का एक गुरौह हमारे पास आया जिस में अबू जह्ल बिन हिशाम भी था। वोह लोग हमारे दरवाज़े पर खड़े हो गए, मैं बाहर निकली तो उन्हों ने कहा : ऐ अबू बक्र की बेटी ! तेरा बाप किधर है ? मैं ने कहा : अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानती मेरे वालिदे मोहतरम कहां हैं ? मेरा इतना कहना था कि अबू जह्ल ने इस ज़ोर से मेरे गालों पर थप्पड़ मारा कि मेरे कान की बाली दूर जा गिरी।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बुढ़ापे में हर मां की ख़्वाहिश होती है कि उस की औलाद उस का सहारा बने, लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इस बन्दी ने ऐन बुढ़ापे के आ़लम में भी अपने बेटे को दीन की नामूस पर क़ुरबान होने का दर्स दिया और उस नेकबख़्त बेटे ने भी मां का कहा सच कर दिखाया।

चुनान्चे, मरवी है कि आप के शहज़ादे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी शहादत से 10 दिन क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इ़यादत के लिये हाज़िर हुवे और त़बीअ़त की नासाज़ी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह जवाब दिया कि अभी बीमार ही हूं। तो उन्हों ने

[1] ..... سیرت ابن ھشام، ھجرۃ رسول اللہ، راحلۃ الرسول صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم، المجلد الاول، ۲/۱۰۰

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : मरने में आ़फ़िय्यत है। इस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बोलीं : शायद तुम मेरी मौत पसन्द करते हो, लेकिन जब तक दो बातों में से एक न हो जाए मैं मरना नहीं चाहती : या तो तुम शहीद हो जाओ और मैं सब्र करूं या दुश्मन के मुक़ाबले में कामयाबी ह़ासिल करो कि मेरी आंखें ठंडी हों। चुनान्चे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (ज़ालिमो जाबिर हुक्मरान ह़ज्जाज का मुक़ाबला करते हुवे) शहीद हो गए और ह़ज्जाज ने इन को सूली पर लटका दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا शदीद बुढ़ापे के बा वुजूद ह़ज्जाज के मजबूर कर देने पर[1] वहां तशरीफ़ लाईं और येह मन्ज़र देख कर उसे मुख़ात़ब करते हुवे फ़रमाया : क्या अभी इस सुवार के उतरने का वक़्त नहीं आया ?[2]

इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बा'द

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! एक ग़ैर मुल्की तह़क़ीक़ी इदारे की रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ इस वक़्त दुन्या भर में मुसलमानों की आबादी एक अरब साठ करोड़ से ज़ियादा हो चुकी है जो दुन्या की आबादी का 23 फ़ीसद ह़िस्सा है। या'नी कहा जा सकता है कि तक़रीबन दुन्या का हर चौथा फ़र्द मुसलमान है, येह ता'दाद कम होने के बजाए दिन ब दिन मज़ीद बढ़ रही है जिस की रोक थाम के लिये कुफ़्र के ऐवानों में ज़लज़ले बपा हैं और वोह हर मुमकिन त़रीक़े से इस सैलाबे रवां के सामने बन्द बांधने की कोशिशें कर रहे हैं। कहीं ग़यूर माओं के जवां साल बेटों की सांसें छीनी जा रही हैं तो कहीं इ़फ़्फ़त व इ़स्मत की पैकर

1 .....जन्नती ज़ेवर, स. 527

2 ..... استیعاب، ۱۵۴۴-عبد اللہ بن زبیر...الخ، ۱/۵۴۲-۵۴۳ ملتقطًا

www.dawateislami.net

दोशीज़ाओं के मुहाफ़िज़ भाइयों का ख़ातिमा किया जा रहा है, कहीं प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की पर्दा नशीन ख़वातीन के सुहाग उजाड़े जा रहे हैं तो कहीं उन की गोद में खिलने वाली नौ खेज़ कलियों को मस्ला जा रहा है। ज़ुल्मो सितम और जब्रो इस्तिबदाद का ऐसा कौन सा ज़रीआ़ है जो बाक़ी छोड़ा जा रहा है? आए दिन नित नए हथकंडों के ज़रीए इस्लाम के इस लहलहाते दरख़्त को सफ़्हए हस्ती से मिटाने की कोशिशें की जा रही हैं। हालांकि ऐसे मज़मूम इरादे रखने वालों को मा'लूम नहीं कि :

दौरे हयात आएगा क़ातिल, क़ज़ा के बा'द — है इब्तिदा हमारी तेरी इन्तिहा के बा'द
क़त्ले हुसैन अस्ल में मर्गे यज़ीद है — इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बा'द

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कर्बो बला में डूबी दास्ताने ज़ुल्मो सितम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! ज़ुल्मो सितम की मुंह ज़ोर आंधियों से घबराइये नहीं, बल्कि अपनी हिम्मत बंधाए रखिये और जब भी हौसले पस्त होने लगें तो करबला की दोपहर के बा'द का वोह लरज़ा खेज़ और दर्दनाक मन्ज़र अपनी निगाहों के सामने लाइये कि जब सुब्ह से दोपहर तक ख़ानदाने नुबुव्वत के तमाम चश्मो चराग़ और दीगर आ़शिक़ाने अहले बैत एक एक कर के शहीद हो गए, इन में जिगर के टुकड़े भी थे और आंख के तारे भी, भाई और बहन के लाडले भी और बाप की निशानियां भी। ज़रा इस माहोल में ख़ानदाने नुबुव्वत की उन ख़वातीन को भी चश्मे तसव्वुर से देखिये जिन में सरवरे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बेटियां भी हैं तो सोगवार माएं और परेशान हाल बहनें भी। उन में वोह भी

www.dawateislami.net

हैं जिन की गोदें ख़ाली हो चुकी हैं, जिन के सीने से औलाद की जुदाई का ज़ख़्म रिस रहा है, जिन की गोद से शीरख़्वार बच्चा भी छीन लिया गया है और जिन के भाइयों, भतीजों और भान्जों की बे गोरो कफ़न लाशें सामने पड़ी हुई हैं। रोते रोते जिन की आंखों का चश्मा सूख गया है। औरत ज़ात के दिल का आबगीना यूंही नाज़ुक होता है ज़रा सी ठेस जो बरदाश्त नहीं कर सकता आह !!! उस पर आज पहाड़ टूट पड़े हैं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़रा अपने दिल पर हाथ रख कर सोचिये कि हमारे यहां एक मय्यित हो जाती है तो घरवालों का क्या हाल होता है ? ग़म गुसारों की भीड़ और चारागरों की तल्क़ीने सब्र के बा वुजूद आंसू नहीं थमते तो फिर करबला के मैदान में ख़ानदाने नुबुव्वत की उन सोगवार औरतों पर क्या गुज़री होगी जिन के सामने बेटों, शोहरों और अज़ीज़ों की लाशों का अम्बार लगा हुवा था, जो ग़म गुसारों और शरीके हाल हमदर्दों के झुरमट में नहीं ख़ूंख़्वार दुश्मनों और सफ़्फ़ाक दरिन्दों के नर्ग़े में थीं। बिल ख़ुसूस ख़ानदाने नुबुव्वत की इन शहज़ादियों पर शामे ग़रीबां क़ियामत से कम न थी, एक त़रफ़ यज़ीदी लश्कर में ख़ुशियों का चरागां था तो दूसरी त़रफ़ ह़रम के पासबानों के हां अंधेरा था, एक त़रफ़ फ़त्ह़ के शादियाने थे तो दूसरी त़रफ़ फ़ज़ा पर मौत के सन्नाटे थे। ज़िन्दगी की येह सोगवार और उदास रात काटे नहीं कट रही थी, रात भर सिस्कियों की आवाज़ आती रही, आहों का धूआं उठता रहा और रूह़ों के क़ाफ़िले उतरते रहे। आज पहली रात थी कि ख़ुदा का घर बसाने के लिये अहले ह़रम ने सब कुछ लुटा दिया था। आह !!! कलेजा शक़ कर देने वाले सारे

www.dawateislami.net

अस्बाब उस रात में जम्अ़ हो गए थे। बड़ी मुश्किल से सुब्ह़ हुई, उजाला फैला और दिन चढ़ने पर ऊंटनी की नंगी पीठ पर गुलशने नुबुव्वत के इन मुरझाए हुवे फूलों को रस्सियों से ख़ूब जकड़ कर बिठाया गया कि जुम्बिश (ह़रकत) तक न कर सकें। फिर अहले बैत का येह लुटा पिटा क़ाफ़िला जिस वक़्त करबला के मैदान से रुख़्सत हुवा, वोह क़ियामत ख़ेज़ मन्ज़र कैसा होगा !

क़ाफ़िले इस त़रह़ दुन्या में बहुत कम जाते हैं
जिस त़रह़ आज के दिन अहले ह़रम जाते हैं
क़ाफ़िला है मदनी लोग हैं औलादे अ़ली
हाशिमी ख़ैल हैं और आले रसूले अ़रबी
अहले बैते नबवी हैं येह असीराने बला
सरो सामान है यां बे सरो सामानी का
आस्तीन अश्क से तर जेबो गिरेबान सब चाक
मुंह पे थी गर्दे अलम आंखें थीं ख़ूं से नमनाक
दिन को राह़त न किसी वक़्त न शब को आराम
साथ ख़ैमा नहीं जिस में कि हो रातों को मक़ाम
ग़मे शब्बीर निहां दिल में किये जाते थे
दाग़े ग़म तोह़फ़ए अह़बाब लिये जाते थे
रंज ताज़ा भी जो आते थे पिये जाते थे
जाने ग़म दीदा को गो सब्र दिये जाते थे
ज़ब्त़ नाला करें तो सीना फटा जाता था
न करें गिर्या तो दिल ग़म से जला जाता था
क्या कहें आ के वोह इस दश्त में क्या खो के चले
घर से आए थे यहां क्या और क्या हो के चले [1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ाफ़िले की सूए कूफ़ा रवानगी

ख़ानदाने रिसालत का येह ताराज क़ाफ़िला जब मक़्तल के क़रीब से गुज़रने लगा तो ख़वातीने अहले बैत बे ताब हो गईं। ज़ब्त़ न हो सका तो आहो फ़रियाद की सदा से करबला की ज़मीन हिल गई। सय्यिदा ख़ातूने जन्नत की

1 .....शामे करबला, स. 219 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

लाडली बेटी हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का हाल सब से ज़ियादा रिक़्क़त अंगेज़ था। किसी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के इन जज़्बात को अश्आ़र की शक्ल में कुछ यूं नक़्ल करने की कोशिश फ़रमाई है :

सर मेरे कोई दोस न देवें बहन तेरी मजबूर ए

किथ्थों लियावां कफ़न मैं तेरा एथ्थों शहर मदीना दूर ए

तुम सा कोई ग़रीब नहीं ख़स्ता तन नहीं शहादत के बा'द गोर नहीं और कफ़न नहीं

हाए हाए पराई बस्ती है अपना वतन नहीं वाक़िफ़ यहां किसी से येह बेकस बहन नहीं

ला कर कफ़न पहनाती मैं मज़लूम भाई को होता अगर वतन तो मैं दफ़्नाती भाई को

(1)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सदमए जांकाह (जान को घुलाने वाले सदमे) की बे ख़ुदी में हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने मदीने की त़रफ़ रुख़ कर लिया और दिल हिला देने वाली आवाज़ में अपने नानाजान को कुछ यूं मुख़ात़ब किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!!! आप पर आस्मान के फ़रिश्तों का सलाम हो, येह देखिये ! आप का लाडला हुसैन करबला के मैदान में बे गोरो कफ़न है, ख़ाको ख़ून में आलूदा है। नानाजान आप की तमाम औलाद को इन बद बख़्तों ने शहीद कर दिया, आप की बेटियां क़ैद हैं, यहां परदेस में हमारा कोई शनासा (जानने वाला) नहीं। नानाजान अपने यतीमों की फ़रियाद को पहुंचिये।** इब्ने जरीर का बयान है कि दोस्त दुश्मन कोई ऐसा न था जो हज़रते

1.....शामे करबला, स. 208

www.dawateislami.net

ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के इस बयान पर आबदीदा न हो गया हो, असीराने ख़ानदाने नुबुव्वत का क़ाफ़िला अश्कबार आंखों और जिगर गुदाज़ सिस्कियों के साथ करबला से रुख़्सत हो कर कूफ़े की त़रफ़ रवाना हो गया।

दूसरे दिन ज़ोहर के वक़्त अहले बैत का लुटा हुवा कारवां (क़ाफ़िला) कूफ़े की आबादी में दाख़िल हुवा, बाज़ार में दोनों त़रफ़ संग दिल तमाशाइयों के ठट लगे हुवे थे, ख़ानदाने नुबुव्वत की बीबियां शर्मो ग़ैरत से गड़ी जा रही थीं, सजदे में सर झुका लिया था कि किसी ग़ैर महरम की नज़र न पड़ सके, वुफ़ूरे ग़म (ग़म की ज़ियादती) से आंखें अश्कबार थीं, दिल रो रहे थे, इस एह़सास से ज़ख़्मों की टीस (तक्लीफ़) और बढ़ गई थी कि करबला के मैदान में क़ियामत टूटना थी टूट गई, अब मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामूस को गली गली फिराया जा रहा है। कलिमा पढ़ने वाली उम्मत की ग़ैरत दफ़्न हो गई थी। इब्ने ज़ियाद के बे ग़ैरत सिपाही फ़त्ह़ का ना'रा बुलन्द करते हुवे आगे आगे चल रहे थे। अहले बैत की सुवारी क़त्ल़ के क़रीब पहुंची तो ख़ानदाने नुबुव्वत की औ़रतें उतारी गईं। इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन अपनी वालिदा और फूफी के साथ बंधे हुवे थे, इधर बुख़ार की शिद्दत से ज़ो'फ़ व नातुवानी इन्तिहा को पहुंच गई थी। ऊंट से उतरते वक़्त ग़श आ गया और बे ह़ाल हो कर ज़मीन पर गिर पड़े, सर ज़ख़्मी हो गया, ख़ून का फ़ुवारा छूटने लगा, येह देख कर ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बे ताब हो गईं, डबडबाई आंखों के साथ कहने लगीं : आले फ़ातिमा में एक ही आ़बिद का ख़ून महफ़ूज़ रह गया था, चलो अच्छा हुवा कूफ़े की ज़मीन पर येह क़र्ज़ भी अदा हो गया।

ताराज कारवां की सूए त़यबा रवानगी

दूसरे दिन येह कारवां (क़ाफ़िला) दिमश्क़ रवाना हुवा तो जिस आबादी से गुज़रता कोहराम बरपा हो जाता। आख़िरे कार दिमश्क़ पहुंचे तो सब से पहले

www.dawateislami.net

ज़हूर बिन क़ैस ने यज़ीद को फ़त्ह की ख़बर सुनाई। पहले तो फ़त्ह की ख़ुश ख़बरी सुन कर यज़ीद झूम उठा लेकिन इस हलाकत आफ़रीं अक़्दाम का होलनाक अन्जाम जब नज़र के सामने आया तो कांप गया, बार बार छाती पीटता था कि हाए इस वाक़िए ने हमेशा के लिये मुझे नंगे इस्लाम बना दिया।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ातिल की पशेमानी मक़्तूल की अहम्मिय्यत तो बढ़ा सकती है पर क़त्ल का इल्ज़ाम नहीं उठा सकती। फिर यज़ीद ने शाम के सरदारों से मुशावरत के बा'द अगले ही दिन नो'मान इब्ने बशीर की सरकर्दगी (सरदारी) में मअ़ 30 सुवारों के अहले बैत का येह ताराज कारवां सूए त़यबा रवाना कर दिया। पहाड़ों, सह़राओं और रेगिस्तानों को उ़बूर करता हुवा येह क़ाफ़िला मदीने की त़रफ़ बढ़ता रहा, यहां तक कि जब ह़िजाज़ की सरह़द शुरूअ़ हुई तो अचानक सोया हुवा दर्द जाग उठा, रह़मतो नूर की शहज़ादियां अपने चमन का मौसिमे बहार याद कर के मचल गईं कि करबला जाते हुवे इन्ही राहों से गुज़री थीं, उस वक़्त अपने ताजदारों और नाज़ बरदारों की शफ़क़त व मेहरबानी के साए में थीं, ज़रा चेहरा उदास हुवा चारह गरों का हुजूम लग गया, पल्कों पे नन्हा सा क़त़रा चमका और प्यार के सागर में त़ूफ़ान उमन्डने लगा। अब इसी राह से लौटी हैं तो क़दमों के नीचे कांटे हैं, तड़प तड़प कर क़ियामत भी सर पे उठा ली तो कोई तस्कीन देने वाला नहीं। लबों की जुम्बिश (ह़रकत) और अब्रू के इशारों से असीरों (क़ैदियों) की ज़न्जीर तोड़ने वाले आज ख़ुद असीरे कर्बो बला हैं।

आख़िर जूंही मदीने की आबादी चमकी, सब्र का पैमाना छलक उठा, कलेजा तोड़ कर आहों का धूआं निकला और सारी फ़ज़ा पे छा गया। ह़ज़रते ज़ैनब, ह़ज़रते शह्र बानो और ह़ज़रते आ़बिद बीमार उबलते हुवे जज़्बात की

www.dawateislami.net

ताब न ला सके। ख़ानदाने नुबुव्वत के दर्दनाक नालों से ज़मीन कांपने लगी, पथ्थरों का कलेजा फट गया। किसी ने बिजली की त़रह़ सारे मदीने में येह ख़बर दौड़ा दी कि करबला से नबीज़ादों का लुटा हुवा क़ाफ़िला आ रहा है, शहज़ादए रसूल का कटा हुवा सर भी उन के साथ है। येह सुनते ही हर त़रफ़ कोहराम मच गया, क़ियामत से पहले क़ियामत आ गई, वुफ़ूरे ग़म (ग़म की ज़ियादती) और जज़्बए बे ख़ुदी में अहले मदीना बाहर निकल आए। जैसे ही आमना सामना हुवा और निगाहें चार हुईं दोनों त़रफ़ शोरिशे ग़म की क़ियामत टूट पड़ी, आहो फ़ुग़ां के शोर से आस्मान दहल गया, ह़ज़रते इमाम का कटा हुवा सर देख कर लोग बे क़ाबू हो गए, दहाड़ें मार मार कर रोने लगे। ह़ज़रते ज़ैनब फ़रियाद करती हुई मदीने में दाख़िल हुईं : नानाजान ! उठिये ! अब क़ियामत का कोई दिन नहीं आएगा, आप का सारा कुम्बा लुट गया, आप के लाडले शहीद हो गए, आप के बा'द आप की उम्मत ने हमारा सुहाग छीन लिया, बे आबो दाना आप के बच्चों को तड़पा तड़पा के मारा, आप का लाडला ह़ुसैन आप के नाम की दुहाई देता हुवा दुन्या से चल बसा, करबला के मैदान में हमारे जिगर के टुकड़े हमारी निगाहों के सामने ज़ब्ह़ किये गए। नानाजान !! येह ह़ुसैन का कटा हुवा सर लीजिये ! आप के इन्तिज़ार में इस की आंखें अब तक खुली हुई हैं ज़रा मर्क़द (क़ब्रे मुबारक) से निकल कर अपनी आशुफ़्ता नसीब बेटियों का दर्दनाक ह़ाल देखिये। ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की इस पुकार से सुनने वालों के कलेजे फट गए।

फिर अहले बैत का येह ताराज कारवां जिस दम अपने इमाम का कटा हुवा सर लिये रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िर हुवा, हवाएं रुक गईं, गर्दिशे वक़्त ठहर गई, पूरी काएनात दम ब ख़ुद थी कि कहीं आज ही क़ियामत न आ जाए। उस वक़्त का दिल गुदाज़ (दिल को नर्म करने वाला) और रूह़ फ़रसा (तक्लीफ़

www.dawateislami.net

देह) मन्ज़र ज़ब्ते तहरीर से बाहर है। क़लम को यारा (ताक़त, हौसला) नहीं कि दर्दो अलम की वोह तस्वीर खींच सके जिस की याद अहले मदीना को सदियों तड़पाती रही। ख़ानदाने नुबुव्वत के सिवा किसी को नहीं मा'लूम कि हुजरए आइशा में क्या हुवा ? करबला के फ़रियादी अपने नानाजान की तुर्बत (क़ब्र मुबारक) से किस तरह वापस लौटे ? अश्कबार आंखों पे रहमत की आस्तीन किस तरह रखी गई ? करबला के पस मन्ज़र में मशिय्यते इलाही का सरबस्ता राज़ किन लफ़्ज़ों में समझाया गया ? मर्क़दे रसूल (हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे मुक़द्दस) से सय्यिदा की ख़्वाबगाह भी दो ही क़दम के फ़ासिले पर थी, कौन जानता है कि लाडले को सीने से लगाने और अपने यतीमों के आंसू आंचल में जज़्ब करने के लिये मामता के इज़्तिराब में वोह भी किसी मख़्फ़ी गुज़रगाह से अपने बाबाजान की हरीमे पाक (मुक़द्दस बारगाह) तक आ गई हों ! तारीख़ सिर्फ़ इतना बताती है कि हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने **बिलक बिलक** कर करबला की दास्ताने ज़लज़ला ख़ैज़ सुनाई।[1]

नाना तुम्हारे पास करें क्या बयान हम
आ'दा के हाथ से हुवे हम पर हैं क्या सितम
कैसे ज़लीलो ख़्वार किये आले मुस्तफ़ा
रुस्वा किया जहां में हमें वा मुसीबता[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 .....जुल्फ़ व ज़न्जीर, ताराज कारवां, स. 5 ता 22 मुलख़्ख़सन व बि तग़य्युरिन
2 .....शामे करबला, स. 241

www.dawateislami.net

घरबार की क़ुरबानी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह बड़े ही दिल गुर्दे का काम है कि जिन गलियों में बचपन गुज़रा हो, जहां अपनों की रौनक़ें हों, जहां मां बाप बहन भाइयों का प्यार मिला हो, उस जगह उस शहर और उन गलियों को हमेशा के लिये छोड़ दिया जाए, वोह भी यूं कि सब से नाता ही टूट जाए, फिर इस पर मुस्तज़ाद (मज़ीद) येह कि उन लोगों के ज़ुल्मो सितम की वज्ह से जाना पड़े जो कभी मुश्फ़िक़ व मेहरबान और इ़ज़्ज़त व एह़तिराम करने वाले हों, यक़ीनन येह एक ऐसी ज़ेह़नी अज़िय्यत है जिसे बरदाश्त करना और सब्रो इस्तिक़्लाल से काम लेना बहुत ही बहादुरी का काम है। दीने इस्लाम से मुशर्रफ़ होने वालों के साथ कुफ़्फ़ारे मक्का की सब हम दर्दियां ख़त्म क्या हुईं उन्हों ने आ़शिक़ाने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा पर ज़ुल्मो सितम की सब ह़दें तोड़ डालीं। उन की सफ़्फ़ाकी की वज्ह से जब हिजरत की इजाज़त मिली और अपने वत़न को छोड़ देने का हुक्म आया तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की त़रह़ बहुत सी सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने भी इस हुक्म पर लब्बैक कहते हुवे अपने घरबार और वत़ने दियार को ख़ैरबाद कह दिया। अलबत्ता ! बा'ज़ सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को हिजरत के वक़्त ऐसे दर्दनाक ह़ालात व वाक़िआ़त का सामना करना पड़ा कि आज भी उन्हें याद कर के दर्दमन्द दिल ख़ून के आंसू रो पड़ते हैं। ज़ैल में ऐसे ही दो वाक़िआ़त को मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

बिन्ते रसूल पर ज़ुल्म की इन्तिहा

ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से बड़ी शहज़ादी हैं जो ए'लाने नुबुव्वत से दस साल क़ब्ल मक्कए

www.dawateislami.net

मुकर्रमा में पैदा हुईं येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गई थीं और जंगे बद्र के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को मक्का से मदीना बुला लिया था। मक्का में काफ़िरों ने इन पर जो ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े इन का तो पूछना ही क्या ह़द हो गई कि जब येह हिजरत के इरादे से ऊंट पर सुवार हो कर मक्का से बाहर निकलीं तो काफ़िरों ने इन का रास्ता रोक लिया और एक बद नसीब काफ़िर हिबार बिन अस्वद जो बड़ा ही ज़ालिम था, ने नेज़ा मार कर इन को ऊंट से ज़मीन पर गिरा दिया जिस के सदमे से इन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया येह देख कर इन के देवर किनाना को जो अगर्चे काफ़िर था एक दम त़ैश आ गया और उस ने जंग के लिये तीर कमान उठा लिया येह माजरा देख कर अबू सुफ़्यान ने दरमियान में पड़ कर रास्ता साफ़ करा दिया और येह मदीनए मुनव्वरा पहुंच गईं। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्ब को इस वाक़िए से बड़ी चोट लगी, चुनान्चे, आप ने इन के फ़ज़ाइल में येह इरशाद फ़रमाया कि هِيَ اَفْضَلُ بَنَاتِيْ اُصِيْبَتْ فِيَّ येह मेरी बेटियों में इस ए'तिबार से बहुत फ़ज़ीलत वाली है कि मेरी त़रफ़ हिजरत करने में इतनी बड़ी मुसीबत उठाई![1]

बेटे और ख़ावन्द की जुदाई का ग़म

इसी त़रह़ जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मदीना शरीफ़ की त़रफ़ हिजरत का पुख़्ता इरादा किया तो ऊंट पर कजावा बांध कर अपनी ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और अपने बेटे ह़ज़रते सलमह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भी कजावे में बिठा लिया। अभी वोह ऊंट की नकैल पकड़ कर चले ही थे कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के

1 .....जन्नती ज़ेवर, स. 499

www.dawateislami.net

मैके वालों या'नी बनू मुग़ीरा ने उन्हें देख लिया। चुनान्चे, वोह कहने लगे : तुम्हें तो हम नहीं रोक सकते लेकिन हमारे ख़ानदान की इस लड़की के बारे में तुम क्या चाहते हो ? हम क्यूं इसे तुम्हारे पास छोड़ दें कि तुम इसे शहर ब शहर लिये फिरो ? येह कह कर उन्हों ने ऊंट की नकैल उन से छीनी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उन से अ़लाहि़दा कर दिया। इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ानदान या'नी बनू अ़ब्दुल असद के लोगों को त़ैश आ गया और उन्हों ने ग़ज़ब नाक हो कर कहा : ब ख़ुदा ! जब कि तुम ने उम्मे सलमह को इस के शोहर से अ़लाहि़दा कर दिया है जो हमारे ख़ानदान में से हैं तो हम हरगिज़ हरगिज़ अबू सलमह के बेटे सलमह को इस के पास नहीं रहने देंगे क्यूंकि वोह बच्चा हमारे ख़ानदान का है। फिर इसी तू तुकार में बनी अ़ब्दिल असद वाले ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह के बेटे को ले कर चल दिये और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बनू मुग़ीरा के लोगों ने अपने पास रोक लिया। ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि हुक्मे ख़ुदा व रसूल पर लब्बैक कहते हुवे हिजरत का पुख़्ता इरादा फ़रमा चुके थे, चुनान्चे, उन्हों ने अपने बेटे और बीवी का मुआ़मला सुपुर्दे ख़ुदा किया और बीवी और बच्चे दोनों को छोड़ कर तन्हा सूए मदीना चल पड़े। इधर ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا शोहर और बच्चे की जुदाई पर हर सुब्ह़ वादिये मक्का के बाहर बैठ कर रोती रहतीं। इसी त़रह़ तक़रीबन एक साल का अ़र्सा गुज़र गया। एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का एक चचाज़ाद भाई आप के पास से गुज़रा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के दिल में आप के लिये नर्म गोशा पैदा फ़रमाया। लिहाज़ा उस ने बनू मुग़ीरा को समझाया कि तुम ने इस मिस्कीना को इस के शोहर और बच्चे से क्यूं जुदा कर रखा है और इसे क्यूं नहीं जाने देते....!!

www.dawateislami.net

बिल आख़िर बनू मुग़ीरा ने इस पर रिज़ामन्द होते हुवे ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहा : अगर चाहो तो अपने शोहर के पास चली जाओ । फिर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ानदान वालों ने बच्चे को ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सुपुर्द कर दिया । ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बच्चे को गोद में ले कर ऊंट पर सुवार हुई और तन्हा जानिबे मदीना रवाना हो गई ।[1]

हिजरत करने वाली चन्द दीगर सहाबियात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़ैल में चन्द सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के अस्माए गिरामी दर्ज हैं कि जिन्हों ने राहे ख़ुदा में हिजरत की :

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जिन अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने हिजरत फ़रमाई उन के अस्माए गिरामी येह हैं :

﴿1﴾ ☞ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़म्आ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿2﴾ ☞ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

﴿3﴾ ☞ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह बिन्ते अबू उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا[2]

﴿4﴾ ☞ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا[3]

[1] .....سیرت ابن ھشام، ذکر المھاجرین الی المدینۃ، المجلد الاول، ۲/۸۵

[2] ..... سیرت ابن ھشام، ذکر الھجرۃ الاولی الی ارض الحبشۃ، المجلد الاول، ۱/۲۰۶تا۲۱۱

[3] ..... شرح زرقانی، ذکر بناء المسجد النبوی...الخ، ۲/۱۸۶

www.dawateislami.net

﴿5﴾ ☞ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا[1]

﴿6﴾ ☞ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا।[2]

हिजरत करने वाली सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चारों शहज़ादियां भी शामिल हैं, उन के अस्माए गिरामी येह हैं :

﴿1﴾ ☞ ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿2﴾ ☞ ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿3﴾ ☞ ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿4﴾ ☞ ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا।[3]

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात और शहज़ादियों के इ़लावा जिन दीगर सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने हिजरत फ़रमाई और दीन की ख़ातिर अपना घरबार सब कुछ छोड़ा। उन में से चन्द एक के नाम येह हैं :

❁ अस्मा बिन्ते अबी बक्र ❁ उम्मे ऐमन ❁ उम्मे रूमान[4] ❁ सह्ला बिन्ते सुहैल ❁ लैला बिन्ते अबी ह़स्मा ❁ अमीना बिन्ते ख़लफ़ ❁ रैत़ा बिन्ते ह़ारिस ❁ रम्ला बिन्ते अबी औ़फ़ ❁ अस्मा बिन्ते उ़मैस ❁ उम्मे कुल्सूम बिन्ते सुहैल ❁ उम्मे ह़रमला बिन्ते अ़ब्दुल अस्वद

[1] ..... اسد الغابہ، ۶۸۵۲-حفصۃ بنت عمر، ۷/۶۷

[2] ..... سیرت ابن ھشام، ذکر المھاجرین الی المدینۃ، المجلد الاول، ۲/۸۸

[3] ..... شرح زرقانی، ذکر بناء المسجد النبوی...الخ، ۲/۱۸۶

[4] ..... شرح زرقانی، ذکر بناء المسجد النبوی...الخ، ۲/۱۸۶

www.dawateislami.net

❁ फ़ातिमा बिन्ते मुजल्लल ❁ फ़ुकैहा बिन्ते यसार ❁ बरका बिन्ते यसार[1] ❁ कुह्तम बिन्ते अ़ल्क़मा[2] ❁ उम्मे यक़ज़ा बिन्ते अ़ल्क़मा[3] ❁ ख़ुज़ैमा बिन्ते जह्म[4] ❁ ह़म्ना बिन्ते जह्श ❁ उम्मे ह़बीब बिन्ते जह्श ❁ जुज़ामा बिन्ते जन्दल ❁ उम्मे क़ैस बिन्ते मोह्सन ❁ उम्मे ह़बीब बिन्ते सुमामा ❁ आमिना बिन्ते रुक़ैश और ❁ सख़्बरा बिन्ते तमीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ ।[5]

आज दीन क्या चाहता है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सहाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ की मज़्कूरा बाला क़ुरबानियों से हमें दर्स ह़ासिल करना चाहिये, आज दुन्या के अक्सर ख़ित्त़ों में बसने वाले करोड़ों मुसलमानों को इस क़दर आसानियां मुयस्सर हैं कि दीने इस्लाम इन में से किसी से घरबार छोड़ने का तक़ाज़ा करता है न किसी से ख़ून का नज़राना मांगता है, आज किसी को दीन के लिये बहन भाइयों और दीगर अइ़ज़्ज़ा व अक़रिबा की हमेशा के लिये जुदाई बरदाश्त करने की ह़ाजत है न दीन की ख़ातिर हिजरत कर के दियारे ग़ैर की सुऊ़बतें (तक्लीफ़ें) झेलने की कोई ज़रूरत । लेकिन अगर कभी कोई ऐसा वक़्त आ जाए तो मुसलमान क़ौम की माओं, बहनों और बेटियों को सहाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ की दीन की ख़ातिर दी गई क़ुरबानियों को पेशे नज़र रखते हुवे डट कर उन का

[1] .....سیرت ابن ہشام، ذکر الھجرۃ الاولی الی ارض الحبشۃ، المجلد الاول، ۲۰۶/۱ تا ۲۱۲

[2] .....اسد الغابہ، ۷۲۲۸-قھطم بنت علقمہ، ۲۳۸/۷

[3] .....اسد الغابہ، ۷۶۳۵-ام یقظہ بنت علقمہ، ۳۹۹/۷

[4] .....اسد الغابہ، ۶۸۷۶-خزیمۃ بنت جھم، ۸۷/۷

[5] .....سیرت ابن ہشام، ذکر المھاجرین الی المدینۃ، المجلد الاول، ۸۸/۲

www.dawateislami.net

मुक़ाबला करना चाहिये और अगर जान भी क़ुरबान करना पड़े तो कभी माथे पर पसीना न आना चाहिये ।

अलबत्ता ! आज दीन की क्या ह़ालत है ! इस की किसी ने क्या ही ख़ूब मन्ज़र कशी है :

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है — उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वत़न से — परदेस में वोह आज ग़रीबुल ग़ुरबा है
जिस दीन के मदऊ़ थे कभी क़ैसरो किसरा — ख़ुद आज वोह मेहमान सराए फ़ुक़रा है
वोह दीन हुई बज़्मे जहां जिस से फ़रोज़ां — अब इस की मजालिस में न बत्ती न दिया है
जो कुछ है वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत — शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है
देखें हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत — सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है
फ़रियाद ऐ किश्तिये उम्मत के निगहबां — बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है
कर ह़क़ से दुआ़ उम्मते मर्हूम के ह़क़ में — ख़त़रों में बहुत इस का जहाज़ आ के घिरा है
उम्मत में तेरी नेक भी हैं बद भी हैं लेकिन — दिलदादा तेरा एक से एक इन में सिवा है
ईमां जिसे कहते हैं अ़क़ीदे में हमारे — वोह तेरी मह़ब्बत तेरी इ़त्रत की विला है
जो ख़ाक तेरे दर पे है जा रौब से उड़ती — वोह ख़ाक हमारे लिये दा रूए शिफ़ा है
जो शहर हुवा तेरी विलादत से मुशर्रफ़ — अब तक वोही क़िब्ला तेरी उम्मत का रहा है
जिस मुल्क ने पाई तेरी हिजरत से सआ़दत — मक्के से कशिश इस की हर इक दिल में सिवा है
कल देखिये पेश आए ग़ुलामों को तेरे क्या — अब तक तो तेरे नाम पे इक एक फ़िदा है
हम नेक हैं या बद हैं बिल आख़िर हैं तुम्हारे — निस्बत बहुत अच्छी है मगर ह़ाल बुरा है
तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई — हां एक दुआ़ तेरी कि मक़्बूले ख़ुदा है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज दीन हम से फ़क़त येह तक़ाज़ा कर रहा है :

❀☞ ऐ काश ! हम इस की ख़ातिर वक़्त की कुरबानी देने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! हम सिराते मुस्तक़ीम पर चलने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! अपने घरवालों को सिराते मुस्तक़ीम पर चलाने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! दुन्यवी फ़ुज़ूल रस्मो रवाज को कुरबान करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! गुनाहों से क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! ग़ुरूरो तकब्बुर और अना का गला घोंटने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर अपनी आख़िरत को संवारने की फ़िक्र करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! झूट और ग़ीबत जैसी दीगर जहन्नम में ले जाने वाली बातों के ख़िलाफ़ जंग को जारी रखने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! ह़सद जैसे मोहलिक गुनाहों से बचने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! नफ़्सो शैत़ान की मक्कारी से बचने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! इ़श्के़ खुदा व मुस्त़फ़ा रखने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! सुन्नतों की शैदाई बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! सुन्नतों का प्रचार करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! पर्दा करने वालियां बन जाएं।

www.dawateislami.net

❀☞ ऐ काश ! फ़ेशन की नुहूसत से बचने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! सौमो सलात की पाबन्दी करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! मां बाप की ताबे'दारी करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! शर्म का दामन तार तार करने के बजाए ह़या वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! गाने बाजों का शौक़ रखने के बजाए ना'ते रसूल पढ़ने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालियां बनने के बजाए क़नाअ़त करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! अपनी चादर से ज़ियादा पाउं फैलाने के बजाए अपनी चादर देख कर पाउं फैलाने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! माल से मह़ब्बत करने वालियां बनने के बजाए राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमान बनने के बजाए उस की फ़रमांबरदार बन्दियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की ह़क़ीक़ी कोशिश करने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ की सीरत पर चलने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! ईमान की सलामती चाहने वालियां बन जाएं।

❀☞ ऐ काश ! ईमान पर ख़ातिमे का शरफ़ पाने वालियां बन जाएं।

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ ने जो क़ुरबानियां दी हैं, अगर्चे हमारा आज का अ़मल इस के हज़ारवें हिस्से के बराबर भी नहीं हो सकता, लेकिन अगर इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे हम दीने इस्लाम की पासदारी करें और शरीअ़त के मुताबिक़ ज़िन्दगी बसर करें तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन का फ़ैज़ान ज़रूर हासिल होगा और क़वी उम्मीद है कि दुन्या से रुख़्सत होते वक़्त हमारा ईमान पर ख़ातिमा होगा ।

ईमान की सलामती

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल से वाबस्ता रह कर फ़िक्रे आख़िरत की मदनी सोच मिलती है और ऐसी बहुत सी मदनी बहारें भी मौजूद हैं कि कई इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ब वक़्ते विसाल ईमान पर रुख़्सती हुई । क्यूंकि वोह ख़ुश नसीब है जो इस दुन्या से कलिमा पढ़ते हुवे रुख़्सत हो । जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ (या'नी कलिमए त़य्यिबा) हो वोह दाख़िले जन्नत होगा ।[1] चुनान्चे,

सांघड़ (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का ह़ल्फ़िया बयान है कि मेरी बहन बिन्ते अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारिय्या को केन्सर (Cancer) के मूज़ी मरज़ ने आ लिया । आहिस्ता आहिस्ता ह़ालत बिगड़ती गई । डॉक्टरों के मश्वरे पर ऑप्रेशन करवाया, त़बीअ़त कुछ संभली मगर कमो बेश एक साल

[1] .....ابو داود، کتاب الجنائز، باب فی التلقین، ص ۵۰۳، حدیث: ۳۱۱۶

www.dawateislami.net

बा'द मरज़ ने दोबारा ज़ोर पकड़ा तो राजपूताना अस्पताल (Hospital) (ज़मज़म नगर (हैदराबाद) बाबुल इस्लाम सिन्ध) में दाख़िल कर दिया गया। एक हफ़्ता अस्पताल में रहीं मगर हालत मज़ीद अबतर (ख़राब) होती चली गई। अचानक इन्हों ने बुलन्द आवाज़ से कलिमए तय्यिबा का विर्द शुरूअ़ कर दिया, कभी कभी दरमियान में اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ भी पढ़तीं। बुलन्द आवाज़ से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ का विर्द करने से पूरा कमरा गूंज उठता था, अ़जीब ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र था, जो आता मिज़ाज पुर्सी करने के बजाए उन के साथ ज़िक्रुल्लाह शुरूअ़ कर देता। डॉक्टर्ज़ (Doctors) और अस्पताल (Hospital) का अ़मला हैरत ज़दा था कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कोई मक़्बूल बन्दी मा'लूम होती है वरना हम ने तो आज तक मरीज़ की चीख़ें ही सुनी हैं और येह शिक्वा करने के बजाए मुसलसल ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ हैं ! तक़रीबन 12 घन्टे तक येही कैफ़िय्यत रही, अज़ाने मग़रिब के वक़्त इसी त़रह़ बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा का विर्द करते करते उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़ज़्लो करम जिस पर भी हुवा उस ने मरते दम कलिमा
पढ़ लिया और जन्नत में गया لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, पेट का क़ुफ़्ले मदीना, स. 653
2 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 39

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	❀❀❀❀❀	سیرت ابن ہشام	دار الفجر مصر ۱۴۲۵ھ
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۳۲ھ	معرفۃ الصحابۃ	دار الوطن عرب شریف ۱۴۱۹ھ
صحیح البخاری	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	الاستیعاب	دار الفکر بیروت ۱۴۲۷ھ
سنن ابن ماجۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء	الروض الأنف	دار الکتب العلمیہ بیروت
سنن ابی داود	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	صفۃ الصفوۃ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۷ھ
مسند احمد	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ	اسد الغابۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
المعجم الکبیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2007ء	الاصابۃ	المکتبۃ التوفیقیہ مصر
کتاب المغازی	عالم الکتب بیروت ۱۴۰۴ھ	تاریخ الخلفاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
فتوح الشام	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ	سبل الھدی والرشاد	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۴ھ
شرح الزرقانی	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۳۳ھ
سیرت مصطفی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۲۹ھ	ذوق نعت	شبیر برادرز لاہور ۱۴۲۸ھ
شام کربلا	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور	نور ایمان	دار الاسلام لاہور ۱۴۳۳ھ
صحابہ کرام کا عشق رسول	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۲۹ھ	شاھنامہ اسلام مکمل	الحمد پبلی کیشنز 2006ء
زلف و زنجیر	زاھد بشیر پرنٹرز لاہور	فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۲۸ھ
جنتی زیور	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۲۷ھ		

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	अइज़्ज़ा व अक़रिबा और अहलो	25
राहे ख़ुदा में पहली जान की कुरबानी	2	इयाल की कुरबानी	26
दीन कुरबानी चाहता है	4	चार बेटे कुरबान करने वाली मां	27
दीन की ख़ातिर अज़िय्यतें बरदाश्त करने वाली सहाबियाते तय्यिबात	6	बाप, भाई और शोहर की कुरबानी	29
		ख़ालू, भाई और शोहर की कुरबानी	30
जुल्मो सितम की आंधियां	7	सब्रो ईसार की आ'ला मिसाल	32
साबिरा ख़ातून	7	बिन्ते सिद्दीक़े अक्बर की कुरबानियां	
बीनाई लौट आई	8	इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला	33
मारते मारते थक जाते	9	के बा'द	34
चेहरा लहू लुहान हो गया	10	कर्बो बला में डूबी दास्ताने जुल्मो सितम	36
उम्मे बिलाल पर मज़ालिम की इन्तिहा	11	क़ाफ़िले की सूए कूफ़ा रवानगी	38
	12	ताराज कारवां की सूए तयबा रवानगी	42
शिकारी ख़ुद शिकार हो चले	14	घरबार की कुरबानी	42
घबराइये मत !	15	बिन्ते रसूल पर जुल्म की इन्तिहा	43
राहे ख़ुदा में कैसी चीज़ पेश की जाए ?	16	बेटे और ख़ावन्द की जुदाई का ग़म	
माल की कुरबानी	16	हिजरत करने वाली चन्द दीगर सहाबियात	45
कंगन हुक्मे सरकार पर कुरबान	18		47
जान की कुरबानी	18	आज दीन क्या चाहता है ?	51
जान से भी ज़ियादा सरकार से महब्बत	19	ईमान की सलामती	53
जान देना या किसी की जान लेना		माख़ज़ो मराजेअ़	

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133004

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

۞ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

۞ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

۞ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

۞ ह़ैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

www.dawateislami.net